

GOVERNMENT OF TAMIL NADU

Hindi Reader

हिन्दी रीडर

STANDARD - V

पाँचवी कक्षा

Department Of School Education

Untouchability is Inhuman and a Crime

5th Hindi Book.indb 1 18-03-2019 17:38:55

Government of Tamil Nadu

First Edition - 2019

Reprint - 2020, 2021, 2022,

2023, 2024

(Published under New Syllabus)

Content Creation

State Council of Educational Research and Training

© SCERT 2019

Printing & Publishing

Tamil NaduTextbook and Educational Services Corporation

www.textbooksonline.tn.nic.in

5th Hindi Book.indb 2 18-03-2019 17:38:55

प्रस्तावना

नई सोच, नई आशाओं के साथ पुस्तक वर्ग ३, वर्ग ४, वर्ग ५ और वर्ग ८ का सृजन किया गया है।

आगे के प्रतिस्पर्धा एवं संघर्ष के वातावरण में बच्चों का सम्यक शारीरिक एवं मानसिक विकास बहुत आवश्यक है ताकि वे भविष्य में आनेवाली चुनौतियों का मुकाबला आसानी से कर सकें। उनके लिए ज्ञान विज्ञान की बातें उतनी ही आवश्यक है जितनी साहित्य और कला संबंधी जानकारी देश विदेश में हो रही घटनाओं से परिचित होना अगर आवश्यक है तो जीवन जीने की व्यावहारिक कला में निपुण होना भी उतना ही आवश्यक है। इन बातों को ध्यान में रखकर ही इस श्रृंखला का सृजन किया गया है। छात्र छात्राओं का सर्वांगीण करना है।

श्रृंखला तैयार करते समय निम्नलिखित बिंदुओं को ध्यान में रखा गया है।

- पाठों की प्रस्तुति के लिए विधा , कौतूहल और भाषा की सरलता आवश्यक है, यही समझते हुए ऐसे पाठों का चयन किया गया है जो बच्चे की जिज्ञासाओं एवं रूचियों को बढावा दे सके। साहित्य की विभिन्न विधाओं से अवगत कराने हेतु कविताएँ, कहानियाँ, लेख, यात्रा वृत्तांत, हास्य कथा, एकांकी, साक्षात्कार, आत्मकथा, डायरी आदि को सम्मिलित किया गया है।
- पर्यावरण संरक्षण आज के युग की सबसे बडी माँग है। बच्चों को प्राथमिक कक्षाओं से ही पर्यावरण की समस्याओं एवं उसके संरक्षण के प्रति जागरूकता लाने के लिए पर्यावरण संबंधी कहानियों एवं कविताओं के साथ साथ समाचार पत्रों में छपे लेख, पोस्टर आदि को भी सम्मिलित किया गया है।
- बच्चों को पुस्तक के केंद्र में रखने के कारण ऐसे पाठों को ही चुना गया ताकि खेल खेल में, मनोरंजन करते हुए अपनी बात बच्चों तक पहुँचा सकें। कक्षा का वातावरण बोझिल न हो, इसलिए रूचिकर पाठों के साथ साथ चुटकुले, शब्द पहेली, चित्रकथाएँ आदि भी दिए गए है।
- समालोचनात्मक सोच, समस्या समाधान, प्रभावशाली संप्रेषण तथा रचनात्मक प्रवृत्ति जैसे कौशलों का विकास करने वाले कार्यकलापों को विशेष रूप से सम्मिलित किया गया है।
- भाषा ज्ञान के अंतर्गत व्याकरण को सम्मिलित कर लिया गया है ताकि वह अलग अलग न होकर उसके साथ जुडा रहे।
- मौखिक वार्तालाप, लिखित कार्य, समूह कार्य, संवाद प्रदर्शन आदि को ध्यान में रखते हुए अभ्यासों का निर्माण किया गया है। सतत एवं व्यापक मूल्यांकन करते समय इस विविधता को ध्यान में रखा जाए। मूल्यांकन करते समय प्रश्न कल्पनाशीलता को उभारें, विषयवस्तु को विस्तार प्रदान करने वाले हों, पाठ्यपुस्तक की परिधि से बाहर वृहतर परिधि को समेटने वाले हों, इन सभी बिंदुओं को ध्यान में रखकर ही अभ्यास में सभी प्रकार के प्रश्नों का समावेश किया गया है।

सीखने के वातावरण को आनंदमयी बनाए रखना अध्यापकों की बहुत बडी जिम्मेदारी है। कक्षा में विद्यार्थियों के संप्रेषण को महत्व दें। बच्चे अपनी बात बोलते समय न हिचकें। उन्हें बोलते अथवा लिखते समय जो भी सहायता चाहिए, प्रदान करे ।

बच्चों के मनोविज्ञान, उनके मानसिक क्षितिज को समझते हुए, उनके जगत से तारतम्य बनाते हुए हमारी ओर से प्रयास है।

5th Hindi Book.indb 4 18-03-2019 17:38:56

देशीयगीतम्

जन गण मन अधिनायक जय हे
भारत भाग्य विधाता
पंजाब सिन्धु गुजरात मराठा
द्राविड उत्कल बङ्गा
विन्ध्य हिमाचल यमुना गङ्गा
उच्छल जलधि तरङ्गा
तव शुभ नामे जागे
तव शुभ आशिष मागे
गाहे तव जय गाथा
जन गण मङ्गल दायक जय हे
भारत भाग्य विधाता
जय हे जय हे जय हे
जय जय जय जय हे !

महाकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुरः

अस्पृश्यत्वम् अपचारः
अस्पृश्यत्वम् अपराधः
अस्पृश्यत्वम् अमानवधर्मः



Preface.indd 5 28-01-2019 10:22:39

तमिल माता की वंदना
(तमिलताय वाळ्तु)

नीरारूम कडलुडुत्त निलमडन्दै केळिलोळुगुम
सीरारूम वदनमेन तिगळ् भारत खंडमिदिल,
तेक्कण्मुम अदिर्चिरन्द द्राविडनल् तिरूनाडुम
तक्कचिरू पिरैनुदलुम तरित्तनरून्तिलकमुमे
अत्तिलक वासनैपोल अनैत्तुलगुम इन्बमुर
ऍत्तिशैयुम पुगळ मण्क्क इरून्द पेरूंद् तमिलअणंगे!
तमिलअणंगे!
उन सीर इलमै तिरम वियन्दु सेयलमरन्दु वाळ्त्तुदुमे!
वाळ्त्तुदुमे!
वाळ्त्तुदुमे!

'मनोनमण्यम' पे. सुन्दरम पिल्लै

5th Hindi Book.indb 7 18-03-2019 17:38:56



राष्ट्रिय प्रतिज्ञा

भारत मेरा देश है।

सब भारतवासी मेरे भाई-बहन है।

मैं अपने देश से प्रेम करता/करती हूँ।

इसकी समृद्ध एवं विविध संस्कृति पर मुझे गर्व है।

मैं सदा इसका सुयोग्य अधिकारी बनने का प्रयत्न करता/करती रहूँगा/रहूँगी।

मैं अपने माता-पिता, शिक्षको एवं गुरुजनो का सम्मान करूँगा/करूँगी और प्रत्येक के साथ विनीत रहूँगा/रहूँगी।

मैं अपने देश और देशवासियों के प्रति सत्यनिष्ठा की प्रतिज्ञा करता/करती हूँ।

इनके कल्याण एवं समृद्धि में ही मेरा सुख निहित है।



5th Hindi Book.indb 8 18-03-2019 17:38:56

विषय सूची

पहला सत्र

1. घर प्यारा 02
2. अभी समय है 05
3. चिट्ठी का सफर 07
4. जहाँ चाह, वहाँ राह 10
5. स्वामी की दादी 14
6. गुलाब सिंह 18
7. सच्चे मित्र 23

दूसरा सत्र

8. नीम का पेड 29
9. छुट्टी का घण्टा बजते ही 31
10. स्वावंलबी 33
11. संत पुरंदरदास 38
12.सांप की बेवकूफी 41
13. शिवाजी को शिक्षा 44

तीसरा सत्र

14. आ रही रवि की सवारी 52
15. कबीर के दोहे 54
16. कबड्डी 55
17. मेवाड का गौरव 59
18. नाना फडणवीस की चतुराई 65
19. ईमानदारी की विजय 69

5th Hindi Book.indb 9 18-03-2019 17:38:56

सत्र I, II, III

व्याकरण, निबंध, पत्र

20. राष्ट्रीय पक्षी मोर 74

21. डाक घर 74

22. मेरा नगर 75

23. पोंगल 75

24. बाघ 76

25. गाय 76

26. व्याकरण 77

27. पत्र 79

28. पर्यावाची शब्द 80

29. लिंग बदलिए 81

30. वचन बदलिए 82

5th Hindi Book.indb 10 18-03-2019 17:38:56

पहला सत्र

Term I



पद्य 1 घर प्यारा



देखो तो कैसे ये चूहे
खेल रहे हैं पकड़म-पकड़ी
कैसे मच्छर टहल रहे हैं
कैसे मस्त पड़ी है मकड़ी!
और छिपकली को देखो
चलती है जो गश्त लगाती,
अरे कतारें बाँधे-बाँधे
कहाँ-चींटियाँ दौड़ी जाती।

और उधर आंगन में देखो
पंछी कैसे झपट रहे हैं,
बिलकुल दीदी और मुझ जैसे
किसी बात पर झगड़ रहे हैं।
इसीलिए तो कहता हूँ माँ
घर न समझो सिर्फ हमारा।
सदा-सदा से जो भी रहता
सबका ही है घर यह प्यारा।



अभ्यास



I. कठिन शब्दार्थ

1. सदा - हमेशा 2. टहलना - घूमना

3. सिर्फ़ - केवल 4. गश्त लगाना - चक्कर काटना

II. प्रश्नों के उत्तर दीजिए -

1. घर प्यारा कैसा बनेगा ?
2. छिपकली गश्त क्यों लगा रही होगी ?
3. पंछी किसकी तरह झगड रहे हैं ?
4. बालक माँ को क्या समझा रहा है ?
5. घर-प्यार कविता के कवि का नाम लिखिए ।

III. नीचे दी गई पंक्तियाँ पूरी करो –

(क) देखो तो . . . . . .

. . . . . ।

. . . . . .

. . . . . है मकडी ।।

(ख) और उधर आँगन . . . . . .

. . . . . झपट रहे हैं

. . . . . .

किसी बात पर . . . . . ।।

5th Hindi Book.indb 3 18-03-2019 17:39:12

IV. पर्यायवाची शब्द लिखिए –

पंछी - खग, विहग, पक्षी

माँ - माता, जननी

घर - गृह

रात - रजनी

V. दिए गए शब्दों का बहुवचन लिखिए –

एकवचन	-	बहुवचन
चींटी	-	चींटियाँ
कतार	-	कतारें
छिपकली	-	छिपकलियाँ
बहन	-	बहनें
मकडी	-	मकडियाँ
रात	-	रातें
मच्छर	-	मच्छर
पंछी	-	पंछी
पेड	-	पेड
पहाड	-	पहाड

5th Hindi Book.indb 4 18-03-2019 17:39:20

पद्य 2 अभी समय है



अभी समय है, अभी नहीं कुछ भी बिगड़ा है,
देखो अभी सुयोग तुम्हारे पास खड़ा है,
करना है जो काम उसी में अपना चित्त लगा दो,
अपने पर विश्वास करो, और संदेह भगा दो।
आएगा क्या समय, समय तो टला जा रहा
देखो जीवन व्यर्थ तुम्हारा चला जा रहा,
तो वीरों की भाँति खड़े हो जाओ अब भी
करके कुछ, जग बीच बड़े हो जाओ अब भी।
उद्योगी को कहाँ सुसमय मिल जाता
समय नष्ट कर नहीं सुख कोई भी पाता,
आलस ही है करा रहा, ये सभी बहाने
जो करना हो करो अभी, कल क्या हो जाने?
ऐसा सुसमय भला और कब तुम पाओगे,
खोकर पीछे इसे सर्वथा तुम पछताओगे,
तो इसमें वह काम नहीं क्यों तुम कर जाओ,
हो जिसमे परमार्थ तथा तुम भी सुख पाओ।



- सियाराम शरण गुप्त

5th Hindi Book.indb 5 18-03-2019 17:39:35

अभ्यास



I. कठिन शब्दार्थ

1. विश्वास – भरोसा
2. आलस – सुस्त
3. परमार्थ – दूसरों की भलाई
4. चित्त – मन
5. सुयोग – अच्छा योग
6. बिगाड़ा – बेकार
7. उद्योगी – परिश्रमी
8. संदेह - भ्रम

II. प्रश्नों के उत्तर दीजिए -

1. अपने पर क्यों विश्वास रखना चाहिये ?
2. सियाराम शरण गुप्त जी पाठकों को क्या चुनौती देते हैं?
3. पछताना क्यों पड़ता है?
4. अभी समय है कविता से क्यों सीख मिलती हैं

5th Hindi Book.indb 6 18-03-2019 17:39:46

गद्य 3 चिट्ठी का सफर



रमा - आप क्या पढ रही हैं , माँ?



माँ - तुम्हारे मामा की चिट्ठी पढ रहीं हूँ, बेटी। उन्होंने लिखा है कि वे कल यहाँ आनेवाले हैं।

रमा - मामा की यह चिट्ठी कौन लाया, माँ?

माँ - यह चिट्ठी डाक द्वारा आयी हैं। डाकिये ने इसे डाक घर से लाकर दिया है?

राम - माँ, चिट्ठी एक स्थान से दूसरे स्थान पर कैसे पहुँचती हैं?

माँ - चिट्ठी लिखनेवाले चिट्ठी में सब समाचार लिखते हैं। फिर उस पर पानेवाले का नाम, घर का नम्बर, गली का नाम और गाँव या शहर का नाम लिखते हैं। इसके बाद उसे डाक पेटी में डाल देते हैं। डाक घर का नौकर रोज इन चिट्ठियों को डाक पेटी से निकालकर डाक बाबू को देता हैं। डाक बाबू उन पर मुहर लगवाते हैं। और अलग अलग स्थानों की चिट्ठियों को अलग अलग थैले में बन्द करते हैं। फिर उन थैलों को रेल स्टेशन पर भेजते हैं।

रमा - तो क्यो रेल से ये थैले जगह-जगह पहुँचते हैं?

5th Hindi Book.indb 7 18-03-2019 17:40:01



माँ - हाँ, रेल में एक लाल रंग का डिब्बा होता हैं। तुमने उसे देखा है न?

रमा - हाँ, मैंने देखा है।

माँ - वह डाक-विभाग का डिब्बा है। डाक-घर का नौकर उन्हें स्टेशन से डाक-घर ले जाता हैं। वहाँ डाक बाबू उन्हें खोलते हैं और चिट्ठियों पर मुहर लगवाते हैं। तब डाकिया उन्हें लेकर घर-घर पहुँचाता है, यह है चिट्ठी का सफर। जहाँ रेल-स्टेशन नहीं होता वहाँ इन थैलों को बस से भेजते हैं।

रमा - मामा ने इस चिट्ठी को कब भेजा होगा।

माँ - मामा ने कल शाम को इसे भेजा होगा। रात की गाडी से यह यहाँ पहुँची होगी।

रमा - माँ, मैं भैया को चिट्ठी लिखना चाहती हूँ। मुझे पैसे देंगी।

माँ - हाँ जरूर दूँगी। भैया को जरूर चिट्ठी लिखना।

5th Hindi Book.indb 8 18-03-2019 17:40:12

अभ्यास



I. कठिन शब्दार्थ

1. आना - आनेवाला
2. लिखना - लिखनेवला
3. पाना - पानेवाला
4. जाना - जानेवाला
5. पहुँचना - पहुँचानेवाला

II. वाक्यों में प्रयोग कीजिए –

1. रोज 2. चाहना 3. जरूर 4. शामको 5. सफर

III. प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. चिट्ठियों को घर-घर कौन पहुँचाता है?
2. डाकिये को चिट्ठी पानेवाले का घर कैसे मालूम होता है?
3. डाक-घर में डाक-बाबू चिट्ठियों को क्या करते हैं ?
4. रेल के लाल रंग के डिब्बे में कौन होते हैं और क्या करते हैं ?
5. चिट्ठियाँ एक स्थान से दूसरे स्थान कैसे पहुँचती है ?
6. जहाँ रेल स्टेशन नहीं होते वहाँ डाक के थैलों को कैसे भेजते हैं?

IV. खाली जगह भरिए –

1. मैं भैया को _____ लिखना _____ हूँ।
2. डाक बाबू चिट्ठी _____ मुहर _____ हैं।
3. यह चिट्ठी डाक _____ आयी।
4. डाकिये ने इसे डाक घर _____ लाकर _____ हैं।

5th Hindi Book.indb 9 18-03-2019 17:40:24



गद्य 4 जहाँ चाह वहाँ राह



छब्बीस साल तक इला का जीवन गुजरात के सूरत ज़िले के राजकोट गाँव में अपने नाना के यहाँ बीता। साँझ होते ही मोहल्ले के बच्चे घरों से बाहर आ जाते। कुछ मिट्टी में आड़ी-तिरछी लकीरें खींचते, कुछ कनेर के पत्तो से पिटपिटी बजाते, कुछ गिट्टे खेलते, कुछ इधर-उधर से टूटे-फूटे घड़ों के ठीकरे बटोरकर पिट्टू खेलते। जब इन खेलों से मन भर जाता तो पेड़ की डालियों पर झूला झूलकर ऊँची-ऊँची पेंगे लेते और ऊँचे स्वर में एक साथ गाते –

कच्चे नीम की निंबौरी
सावन जल्दी अइयो रे!

इला गाने में तो उनका साथ देती, पर उनके साथ पेंगे नहीं ले पाती। रस्सी पकड़ने को हाथ बढ़ाती मगर हाथ तो उठते ही नहीं थे। वह चुपचाप एक किनारे बैठ जाती। मन-ही-मन सोचती, "मैं भी ऐसा कुछ क्यों नहीं कर पाती हूँ। बच्चे भी चाहते कि इला-किसी – न- किसी तरह तो उनके साथ खेल सके।"

कभी-कभी वह पकड़म – पकड़ाई और विष –अमृत के खेल में शामिल

5th Hindi Book.indb 10 18-03-2019 17:40:37

हो जाती। साथियों के साथ जमकर दौड़ती मगर जब 'थप्पा' करने की बारी आती तो फिर निराश हो जाती। हाथ ही नहीं उठेंगे तो थप्पा कैसी देगी? वह बहुत कोशिश करती पर उसके हाथों ने तो जैसे उसका साथ न देने की ठान रखी हो। इला ने अपने हाथों की इस ज़िद को चुनौती माना।

उसने वह सब अपने पैरों से करना सीखा जो हम हाथों से करते हैं। दाल-भात खाना, दूसरों के बाल बनाना, फ़र्श बुहारना, कपडे धोना, तरकारी काटना यहाँ तक कि तख्ती पर लिखना भी। उसने एक स्कूल में दाखिला ले लिया। दाखिला मिलने में भी उसे परेशानी हुई। कहीं तो उसकी सुरक्षा को लेकर चिंता थी, कहीं उसके काम करने की गति को लेकर। किसी काम को तो वह इतनी फुर्ती से कर जाती कि देखने वाले दंग रह जाते।

पर किसी-किसी काम में थोडी बहुत परेशानी तो आती ही थी। वह परेशानियों के आगे घुटने टोकने वाली नहीं थी। उसने दसवीं कक्षा तक पढ़ाई की। वह दसवीं की परीक्षा पास नहीं कर पाई इला को यह मालूम न था कि परीक्षा के लिए उसे अतिरिक्त समय मिल सकता है।



उसे ऐसे व्यक्ति की सुविधा भी मिल सकती थी जो परीक्षा में उसके लिए लिखने का काम कर सके। यह जानकारी इला को समय रहते मिल जाती तो कितना अच्छा रहता। उसे इस बात का दुख हैं । पर यहाँ आकर सब कुछ खत्म

5th Hindi Book.indb 11 18-03-2019 17:40:50

तो नहीं हो जाता न!

उसकी माँ और दादी कशीदाकारी करती थीं। वह उन्हें सूई में रेशम पिरोने ले लेकर बूटियाँ उकेरते हुए देखती। न जाने कब उसने कशीदाकारी करने की ठान ली। यहाँ भी उसने पैर के अँगूठों का सहारा लिया। दोनों अँगूठों के बीच सूई थामकर कच्चा रेशम पिरोना कोई आसान काम नहीं था। पर कहते हैं न, जहाँ चाह वहाँ राह। उसके विश्वास और धैर्य ने कुदरत को भी झुठला दिया।

पद्रंह-सोलह साल की होते-होते इला कठियावाड़ी कशीदाकारी में माहिर हो चुकी थी। किस वस्त्र पर किस तरह के नमूने बनाए जाएँ, कौन-से रंगों से नमूना खिल उठेगा और टाँके कौन-से लें, यह सब वह समझ गई थी।

एक समय ऐसा भी आया अब उसके द्वारा काढ़े गए परिधानों की प्रदर्शनी लगी। इन परिधानों में काठियावाड़ के साथ-साथ और कई टाँके भी इस्तेमाल किए थे। पत्तियों को चिकनकारी से सजाया था। डंडियों को कांथा से उभारा था। पशु-पक्षियों की ज्यामितीय आकृतियों को कसूती और जंजीर से उठा रखा था। पारंपरिक डिज़ाइनों में यह नवीनता सभी को बहुत भाती।

इला के पाँव अब रूकते नहीं है। आँखों में चमक, होंठो पर मुस्कान और अनूठा विश्वास लिए वह सुनहरी रूप ली बूटियों उकेरते थकती नहीं हैं।

5th Hindi Book.indb 12 18-03-2019 17:41:02

अभ्यास



I. कठिन शब्दार्थ –

1. चुपचाप – शांत
2. कोशिश – प्रयत्न
3. परेशानी – दुःख
4. खत्म – पूरा
5. सजाना – अलंकृत करना

II. प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. इला कहाँ रहती थी?
2. बच्चे इला के साथ क्या करना चाहते थे ?
3. इला क्यों हाथ नहीं उठा सकती थी?
4. इला कौन सा काम अपने पैरों से करने के लिए सीख ली?
5. इला ने कौन सी कक्षा तक पढाई की?

5th Hindi Book.indb 13 18-03-2019 17:41:11

कहानी 5 स्वामी की दादी



बैठक और भोजन कक्ष के बीच, कम हवादार अंधेरे गलि यारे की बंद सी कोठरी में स्वामीनाथन की दादी अपने सारे सामान के साथ रहती थी। उनका सामान था – पाँच दरियाँ तीन चादर – पाँच रोकियोंवाला भारी भरकस बिस्तर पट्सन के रेशे का बना एक वर्गाकार बक्सा और लडकी का एक छोटा बक्सा जिसमें ताँबे के सिक्के इलायची लौंग और सुपारी पडे रहते थे। रात के भोजन के बाद स्वामीनाथन दादी के पास उनकी गोद में सिर रखे लौंग इलायची की गंध भरे वातावरण में अपने को बहुत प्रसन्न और सुरक्षित महसूस कर रहा था।

बड़ी प्रसन्नता से भरकर वह बोला, 'ओह दादी ! तुम नहीं जानती, राजम कितनी अच्छी है। उसने दादी को राजम और मणि की पहली दुश्मनी और फिर दोस्ती की कहानी कह सुनाई। तुम्हे पता है उनके पास सचमुच ही पुलिस की वर्दी है,' स्वामीनाथन बोला सच... ? उसे पुलिस की वर्दी क्यों चाहिए? दादी ने पूछा।



उनके पिता पुलिस अधीक्षक हैं। वह यहाँ की पुलिस के सब से बडे अफसर हैं। दादी काफी प्रभावित हुई। उनका सच में काफी बडा दफ्तर होगा। उन्होंने कहा। फिर उन्हेंने उन दिनों की कहानी सुनानी शुरू की जब स्वामीनाथन के दादा शानदार सब मेजिस्ट्रेटथे – जिनके दफ्तर में पुलिसवाले काँपते हुए खडे रहते थे। उनसे डरकर खूँखार से खूँखार

5th Hindi Book.indb 14 18-03-2019 17:41:27

डाकू तक भाग खडे होते थे । स्वामीनाथन अधीर होकर उनकी कहानी खत्म होने का इतंजार करने लगा लेकिन दादी बोलती ही गई, इधर-उधर भटकती हुई और अलग-अलग समय पर घटी घटनाओं को गड्डमड्ड करती हुई ।

"बस काफी है दादी" उसने रूखे स्वर में कहा – "मैं तुम्हें राजम के बारे में कुछ बताना चाहता हूँ । जानते हो, उसे गणित में कितने नंबर मिलते हैं?" सारे नंबर मिलते होंगे । है न ? दादी ने पूछा । "अरे नहीं, उसे सौ में से नब्बे मिलते हैं। चलो अच्छा है। लेकिन तुम्हे भी मेहनत करके उसकी तरह नंबर लेनी चाहिए .... तुम्हे पता है तुम्हारे दादा कभी कभी ऐसे उत्तर लिखते थे कि परीक्षकों को भी चकित कर देते थे? किसी सवाल का जवाब देने में वे दूसरों के मुकाबले दसवाँ हिस्सा वक्त लेते थे । और फिर उनके जवाब इतने शानदार होते थे कि कभी-कभी उनके अध्यापक उन्हें दो सौ नंबर तक दे देते थे । ... जब उन्होंने एम.ए. किया तो उन्हें इतना बडा मैडल मिला था । मैं कई सालों तक उसे गले में पहनती रही । पता नहीं मैंने कब उसे उतारा ही, जब तुम्हारी बुआ पैदा हुई .... । नहीं तुम्हारी बुआ नहीं – तुम्हारे पिता । याद आया, तब तुम बच्चा दस दिन का था। अरे नहीं, पहले ठीक कहा था । तुम्हारी बुआ ही पैदा हुई थी। पता है, वह मैडल अब कहाँ हैं? मैंने वह तुम्हारी बुआ को दिया और उस बेबकूफ ने उसे गलवाकर चार चूडियाँ बनवा लीं। और वह भी इतनी मामूली – सी चूडियाँ .... थी । मैं हमेशा कहती रही हूँ कि हमारे परिवार में उस जैसा महामूर्ख कोई नहीं, और - ।" अब बस भी करो दादी। तुम बेकार की पुरानी कहानियाँ सुनाती रहती हो। क्या तुम राजम के बारे में नहीं सुनना चाहती? हाँ, हाँ बोलो ।

दादी, अब राजम छोटा-सा लड़का था तो उसने शेर मारा था। सचमुच? बडा बहादुर लड़का है। तुम यह बात मुझे खुश करने के लिए कह रही हो। तुम्हें

5th Hindi Book.indb 15 18-03-2019 17:41:37

यकीन नहीं हुआ होगा। स्वामीनाथन ने बडे उत्साह से कहानी शुरू की, "राजम के पिता एक जंगल में डेरा डाले हुए थे। राजम उनके साथ था। अचानक दो शेर उनपर झपटे और एक ने पीछे से हमला करके पिता को गिरा दिया। दूसरे ने राजम का पीछा किया। राजम एक झाडी के पीछे छुप गया और वही से गोली चलाकर शेर को मार डाला। दादी! क्या तुम सो गई? उसने कहानी खत्म होने पर पूछा, "नहीं बेटा सुन रही हूँ"।

अच्छा बताओ, कितनी शेरे आए थे ? दो शेर राजम पर झपटे थे। दादी ने जवाब दिया। स्वामीनाथन दादी के गलत जवाब से चिढ़ गया। मैं तुम्हें इतनी जरूरी बाते बता रहा हूँ और तुम नींद में न जाने क्या-क्या ऊलजलूल कल्पना किए जा रही हो। अब मैं तुम्हे कुछ नहीं बताऊँगा। मै जानता हूँ, तुम क्यों ऐसा कर रही हो। तुम राजम को पसंद नहीं करती।

नहीं नहीं वह तो बहुत प्यारा लड़का है दादी ने बडे विश्वास से कहा, उन्होंने राजम को देखा तक नहीं था। स्वामीनाथन खुश हो गया। दूसरे ही क्षण उसके मन में एक नया संदेह पैदा हुआ। दादी, शायद तुम्हे शेर की कहानी पर विश्वास नहीं हो रहा है।

मैं एक एक शब्द पर विश्वास करती हूँ। दादी ने स्वर में मिठास भरकर कहा। स्वामीनाथन को इससे खुशी हुई, लेकिन उसने चेतावनी के तौर पर जोडा, "जो भी उसे झूठा कहेगा वह उसे गोली मार देगा। दादी ने इसका समर्थन किया और हरिचन्द्र की कहानी सुनानी की बात कही जिसमें वचन का पालन करने के लिए सिंहासन पत्नी और बच्चे को खो दिया और अंत में उसे सब कुछ वापस मिल गया। उसने कहानी आधी ही भी सुनाई थी कि स्वामीनाथन खुर्राटे लेने लगा। दादी भी रुक – रुककर बोलने लगी, फिर वह भी सो गई।"

5th Hindi Book.indb 16 18-03-2019 17:41:48

अभ्यास



I. कठिनार्थ शब्द

1. चेतावनी 2. समर्थन 3. हिस्सा 4. दफ्तर

5. सुरक्षित 6. भटकना

II. प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. सिक्के किन किन धातुओं से बनते हैं।

2.मैडल से चूडियाँ बनवा लेने पर दादी ने बुआ को महामूर्ख क्यों माना?

3. स्वामी का अपनी दादी के साथ कैसा रिश्ता था?

4. दादी अपने बक्से में इलायची लौंग और सुपारी क्यों रखती थी?

5th Hindi Book.indb 17 18-03-2019 17:41:58

कहानी 6 गुलाब सिंह



यह कहानी एक ऐसे बालक के साहस और देश-प्रेम की गाथा हैं जिसने देश की आज़ादी के लिए अपने प्राण न्योछावर कर दिए .

उसके घर में पिता थे, माँ थीं और एक गुड़िया-सी बहन् थी । वह सारे घर का दुलारा था।

एक दिन की बात हैं। वह बीमार पड़ा । माँ ने उसका खाना बिलकुल बंद कर दिया था । पर उसका बार-बार कुछ खाने को माँगना, छोटी बहन से ने सहा गया । वह चुपके से गुड़ और चने चुरा लाई और खिला दिए अपने भैया को। उसके बाद भैया का बुखार बढ़ गया पर वह तो खिला ही चुकी थी। अपने भाई के संतोष के लिए वह माँ-बाप का गुस्सा भी सहने को तैयार थी। पर भाई ने गुड़-चने की बात किसी को न बताई । धीरे-धीरे रोग चला गया पर भाई के मन पर बहन के प्रेम की छाप छप गई ।



ऐसी एक नहीं, अनेक बातें – बहन की, माँ की, पिता की, उसके मन पर छपी थीं। वह कभी उनसे लड़ता-झगड़ता भी, पर आँखों के आँसू और मन के रंग, उसके मन पर छपी इन तस्वीरों को धो न सके।

एक दिन ऐसी हवा बही कि मुरझाए हुए दिलों में नई जान आ गई। यह हवा उमंगों की हवा थी। बड़ा भारी जुलूस निकलना था। कौमी झंडे का जुलूस था वह। पर बादशाह का हुक्म था कि जुलूस न निकले। शहर में आतंक छा गया। बड़ा अत्याचारी था वह बादशाह।

"बड़ा आया बादशाह! क्यों न निकले जुलूस? क्यों न निकले हमारा झंडा!" भाई ने बहन से कहा।

बहन बोली, "कौन है यह बादशाह?"

भैया ने कहा, "ऊँह, होगा कोई!"

बहन ने पूछा, "क्यों न निकले जुलूस? क्यों न निकले झंडा?"

भाई कटु स्वर में बोला, "हमारा देश बादशाह का गुलाम जो हैं।"

उत्तर था – तब तो ज़रूर निकले जुलूस! हम ज़रूर फहराएँगे अपना झंडा! देखते हैं कौन रोकता है हमें।

झंडे की तैयारी होने लगी। बहन ने अपनी पुरानी ओढ़नी फाड़कर झंडा बना लिया। लाल हरा लंग भी चढ़ गया। भाई ने उसे अपने खेलने के डंडे से बाँध लिया। झंडा तैयार था।

अब भाई झंडा लेकर चला। बहन दरवाजे पर खडी देखती रह गई "अरे भाई! जाते कहाँ हो? हम भी साथ चलेंगे " बहन आग्रह से बोली।

5th Hindi Book.indb 19 18-03-2019 17:42:23

"पर बहन, बड़ी दूर जाना है। तुम थक जाओगी ।"

"नही भैया!"

"नही बहन!"

"जुलूस कौन बनाएगा? तुम झंडा उठाना, हम जुलूस बनाकर चलेंगे पीछे-पीछे।"

"नही रानी, तुम जुलस नहीं...., तुम एक काम करो। हमें रोली का तिलक लगाकर विदा करो जैसे राजकुमारी अपने भाई राजकुमार को विदा करती है।"

बहन ने खुशी की किलकारी के साथ ताली बजाई और दौड़कर, थोड़ी-सी रोली, थोड़े-से चावल सजा लाई । थाली में एक दीया भी जल रहा था। भाई की आरती उतारनी थी । मुँह के चारों तरफ़ घूमती थाली एक आभामंडल बनाने लगी । उसने देवी-देवताओं के चित्रों में भी वैसा ही आभामंडल देखा था । भाई के चारों तरफ़ वैसा ही आभामंडल देखकर वह बहुत खुश हुई ।

बहन ने भाई के माथे पर तिलक लगाया, चावल बिखराए । तब भाई के सिर पर हाथ फेरा और बिदा लीं। अब वह झंडा लेकर चला । बहन दर्वाज़े पर खड़ी देखती रह गई । कहानियाँ की राजकुमारी इसी तरह विदा करती है। वह झंडे को लहराते हुए ले जाते भाई को दूर तक देखती रही ।

कुछ दूर जाने पर बादशाह के सिपाहियों ने झंडेवाले को रोका। वह न रुका। बादशाह के सिपाहियों ने गोली चला दी। वह गिरा। झंडा न गिरा । वह उसके हाथ में था। गोली चलते देख कोई उसके पास न आया।

5th Hindi Book.indb 20 18-03-2019 17:42:34

बहन ने भाई को गिरते देखा, वह दौड़ पड़ी। भाई खून से लथपथ पड़ा था। वह पुकारती रही, "भैया ! भैया !"

भाई के प्राण मानो यह अमृतवाणी सुनकर लौट पड़े। वह बोला, "तू आ गई, यह झंडा ले।"

बहन ने झंडा थाम लिया। भाई चल गया। बहुत रोई पर झंडा हाथ में उठाए रही। बादशाह के सिपाही मानो गढ़ जीतकर चले गए। लोग भागे आए। उन्होंने भाई की देह उठाई। आगे-आगे झंडा लिए बहन चलने लगी।

बादशाह का हुक्म था – जुलूस नहीं निकलेगा। जुलूस निकला।

झंडा नहीं निकलेगा। झंडा निकला और बड़ी शान से निकला।

यह बालक था – गुलाब सिंह जो आपनी सुगंध बिखेरकर चला गया।

- सुभद्राकुमारी चौहान



5th Hindi Book.indb 21 18-03-2019 17:42:45

अभ्यास



I. कठिन शब्दार्थ:

1. दुलारा - प्यारा
2. कटु - कड़वा
3. छाप - प्रभाव
4. उमंग - जोश
5. कौमी - देश
6. थाम लेना - पकड लेना
7. आतंक - क्रांति
8, आभामंडल - प्रकाश का घेरा

II. प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. बहन ने भाई को गुड़ चने क्यों खिलाए ?
2. वे लोग कौन थे जो जुलूस निकालना चाहते थे ?
3. लोग जुलूस क्यों निकालना चाहते थे?
4. किसने जुलूस निकालने से मना किया और क्यों?
5. जुलूस निकालने में बहन ने भाई की क्या मदद की ?
6. भाई के बलिदान के बाद बहन ने झंडा क्यों थामा?

5th Hindi Book.indb 22 18-03-2019 17:42:54

कहानी 7 सच्चे मित्र





बहुत पुरानी बात है। एक तालाब के किनारे नीम एक बहुत पुराना व बडा पेड था। उस पर एक कौआ रहता था। पेड के नीचे बिल में एक चूहा रहता था। पास ही झाडियों में एक हिरन रहता था और पास के तालाब में एक कछुआ रहता था। कौआ, चूहा, हिरन और कछुआ पक्के दोस्त थे।

वे हमेशा साथ-साथ खेलते-कूदते थे। मुसीबत में एक दूसरे की मदद करते थे। मिल-बाँटकर खाते थे। एक बार शाम को हिरन वापस नहीं लौटा। उसके दोस्तों को बहुत चिंता हुई।

कौए ने कहा, "मै देखकर आता हूँ कि हिरन कहाँ रह गया हैं?

कौआ उडकर, इधर-उधर देखने लगा। थोड़ी ही देर में उसे हिरन दिख गया। उसने देखा हिरन एक जाल में फँसा हुआ है। वह उडकर हिरन के पास गया। कौए को आया देख हिरन ने कहा "दोस्त मुझे बचा लो। शिकारी मुझे मार डालेगा।"



कौआ बोला, "चिंता मत करो दोस्त, मैं अभी चूहे को लेकर आता हूँ। वह इस जाल को अपने तेज दाँतो से तुरंत काट देगा।"

5th Hindi Book.indb 23 18-03-2019 17:43:07



कौए ने वापस आकर चूहे और कछुए को सारी बाते बताई। चूहा कौए से बोला, “दोस्त देर मत करो। मुझे अपने पंज़ो में पकडकर, तेजी से उडकर हिरन के पास ले चलो। कौए ने तुरंत चूहे को सावधानी से अपने पंजों में पकडा और उड चला हिरन के पास। हिरन के पास पहुँचने पर चूहे ने अपने तेज दाँतों से जल्दी-जल्दी जाल को काट दिया। हिरन जाल से आजाद हो गया। धीरे-धीरे चलता हुआ कछुआ भी वहाँ पहुँच गया था।”

हिरन बोला, “भागो शिकारी आ रहा है। शिकारी को आता देख कौआ उड गया , चूहा झाड़ी में घुस गया, हिरन भाग गया। कछुआ भी धीरे-धीरे तालाब की ओर चल दिया।

शिकारी ने देखा हिरन भाग गया है। और जाल कटा पडा है। यह देखकर वह बहुत दुखी हुआ। उसने इधर-उधर देखा। धीरे-धीरे जाता हुआ कछुआ उसे दिखाई दिया। उसने लपककर कछुए को पकड लिया और सोचा, “चलो आज कछुआ ही सही। वह उसे थैले में डालकर चल पडा।



अब तीनो दोस्तों ने कछुए को बचाने की योजना बनाई हिरन बोला मैं घास खाने के बहाने शिकारी के सामने जाऊँगा। मैं उसके सामने धीरे धीरे चलूँगा। शिकारी थैला फेंककर मेरे

5th Hindi Book.indb 24 18-03-2019 17:43:19

पीछे भागेगा । मैं उसे दूर तक ले जाऊँगा । तब तक चूहा थैले को काट देगा । कछुआ झाडियों के रास्ते तालाब में चला जाएगा जब कछुआ तालाब में चला जाएगा, तब कौआ आकर मुझे बता देगा। मैं तेजी से भागकर दूर चला जाऊँगा।

इतना कहकर हिरन शिकारी के सामने आ गया। हिरन को देखते ही शिकारी ने थैला पटका और उसके पीछे दौड पडा । हिरन उसे दूर तक दौडकर ले गया। इधर चूहे ने थैला काट दिया । कछुआ थैले से निकलकर तालाब में चला गया । कौए ने तेजी से उडकर हिरन को भागने का इशारा कर दिया । हिरन तेजी से भागकर शिकारी के आँखो से ओंझल हो गया ।

शिकारी हिरन को नहीं पकड सका । वह लौटकर थैले के पास आया । थैला कटा हुआ था । कछुआ भी भाग चुका था । यह देखकर शिकारी बहुत दुखी हुआ। परेशान होकर शिकारी खाली हाथ लौट गया। चारों दोस्त फिर से पहले की तरह खुशी खुशी एक साथ रहने लगे । मुसीबत के समय दोस्ती काम आती है।

5th Hindi Book.indb 25 18-03-2019 17:43:29

अभ्यास



I. कठिन शब्दार्थ:

1. मुसीबत - संकट
2. लपककर - तेजी से
3. थैला पटका – थैला फेंका
4. ओंझल - गायब

II. सही विकल्प पर चिह्न (✓) लगाइए –

1. तालाब के किनारे कौन सा पेड था ?

   1. बरगद का ☐ 2. पीपल का ☐ 3. नीम का ☐

2. हिरन कहाँ रहता था ?

   1. जंगल में ☐ 2. झाडियों में ☐ 3. गुफा में ☐

3. कितने दोस्त थे ?

   1. चार ☐ 2. पाँच ☐ 3. तीन ☐

4. हिरन को देखने कौन गया ?

   1. कछुआ ☐ 2. चूहा ☐ 3. कौआ ☐

5. कौआ चूहे को अपने पंजो में पकडकर क्यों ले गया?

   1. उसे खाने के लिए ☐
   2. हिरन को आजाद करने के लिए ☐
   3. हवा में सैर कराने के लिए ☐

6. तीनों दोस्तों ने क्या योजना बनाई ?

   1. कछुए को बचाने की ☐
   2. शिकारी को मारने की ☐
   3. भागने की ☐

5th Hindi Book.indb 26 18-03-2019 17:43:36

III. प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. हिरन जाल में कैसे फंसा ?

2. हिरन जाल से कैसे आजाद हुआ?

3. तीनों मित्रों ने कछुए को कैसे छुडाया?

4. शिकारी को खाली हाथ क्यों लौटना पडा?

5. सच्चे मित्र कहानी से हमें क्या शिक्षा मिलती है

5th Hindi Book.indb 27 18-03-2019 17:43:46

दूसरा सत्र

Term II



पद्य 8 नीम का पेड



मेरे घर के पास लगा है
पेड़ नीम का हरा-भरा,
उसकी डालें झुक झुक छूतीं
मेरे रहने का कमरा
रोज़ सबेरे चिड़ियाँ आकर
इसमें शोर मचाती हैं,
तरह-तरह के गाने गाकर
मेरा दिल बहलाती हैं।
नीम न होती अगर सामने
तो घर उजड़ा दिखलाता,
हरियाली के बिना हमारा
दिल न यों हरा रह पाता।

- श्री सोहनलाल द्विवेदी



5th Hindi Book.indb 29 18-03-2019 17:44:43

अभ्यास



I. कठिन शब्दार्थ

1. फनगी – पेड़ की शाखा का अग्र भाग
2. कोंपल – किसलय
3. शोर – कोलाहल

II. प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. 'नीम का पेड' की विशेषता बताइये ।
2. नीम का पेड कविता के कवि का नाम बताईए?
3. नीम का पेड़ न होने से घर कैसा होगा?
4. चिडियाँ नीम पेड़ पर बैठकर क्या करती है ?

III. पद्य का भावार्थ लिखिए –

1. रोज़ सबेरे . . . . . दिल बहलाती हैं ।
2. नीम न होती . . . . . हरा रह पाता ।

5th Hindi Book.indb 30 18-03-2019 17:44:54

पद्य 9 छुट्टी का घण्टा बजते ही





छुट्टी का घण्टा बजते ही स्कूलों से
निकल-निकल आते हैं जीते-जागते बच्चे
हँसते-गाते चल देते हैं पथ पर ऐसे
जैसे भास्वर भाव वही हों कविताओं के
बन्द क़िताबों से बाहर छन्दों से निकले
देश-काल में व्याप्त रही है जिनकी गरिमा।
मैं निहारता हूँ उनको फिर-फिर अपने को,
और भूल जाता हूँ अपनी क्षीण आयु को !

केदारनाथ अग्रवाल



5th Hindi Book.indb 31 18-03-2019 17:45:20

अभ्यास



I. कठिन शब्दार्थ

1. भास्वर - पसन्दित
2. व्याप्त - फैला हुआ
3. गरिमा - गौरव
4. निहारना - देखना
5. क्षीण - कमज़ोर
6. पथ - रास्ता, राह, मार्ग
7. आयु - उम्र

II. निम्नलिखित पद्यांश का भाव स्पष्ट कीजिए

(क) हँसते-गाते चल देते हैं पथ पर ऐसे
जैसे भास्वर भाव वही हों कविताओं के

(ख) मैं निहारता हूँ उनको फिर-फिर अपने को,
और भूल जाता हूँ अपनी क्षीण आयु को ।

III. छुट्टी का घंटा बजते ही कविता का सारांश लिखिए ।

5th Hindi Book.indb 32 18-03-2019 17:45:30



गद्य 10 स्वावंलबी

"नहीं माँ मैं नहीं जाऊँगा" माहिर ने माँ से कहा।

"चला जा बेटा, तू नहीं जाएगा तो फिर कौन जाएगा?" माँ बोली।

माँ माहिर से बार-बार कह रही थीं कि वह गेहूँ पिसवाकर ले आए, लेकिन माहिर जाने को तैयार नहीं हो रहा था।

माहिर के पिता जी एक अधिकारी है। उनके घर पर काम करने के लिए एक सेवक नियुक्त है। पिछले चार-पाँच दिनों से वह छुट्टी पर था और अगले चार-पाँच दिनों तक उसके आने की कोई संभावना भी नहीं थी। घर में आटा खत्म हो चुका था। इसलिए यह काम माहिर के सिर पर आ पड़ा था। माहिर इस काम को करने में शर्म महसूस कर रहा था। उसने सोचा कि जब वह गेहूँ का डिब्बा साइकिल पर रखकर जाएगा तो लोग उसे देखकर हँसेंगे। उसने कहा, "माँ! गेहूँ पिसवाने नहीं जाऊँगा, मेरा काम नहीं हैं।"

माँ उसे समझाते हुए बोलीं, "बेटा! काम मेरा या तेरा नहीं होता। नियम हमारे ही बनाए हुए हैं कि यह काम इसका है और वह काम उसका है! ये बहाने करना छोडो और चक्की पर जाओ।"

माहिर माँ की बात काटते हुए बोला " माँ! मैं ने इससे पहले यह काम कभी किया नहीं हैं, यह मुझसे कैसे होगा? इतना भारी डिब्बा मैं कैसे उठा पाऊँगा?"

माहिर की इस बात का जैसे माँ पर कोई असर हुआ ही नहीं। उसके पास माहिर की इस दलील का भी जवाब था। वे बोलीं, "बेटा! यहाँ साइकिल पर डिब्बा रखवाने में मैं तेरी मदद कर दूँगी और चक्की के पास इसे उतारने

5th Hindi Book.indb 33 18-03-2019 17:45:44

चक्कीवाला तेरी मदद कर देगा। इसी तरह वापसी में भी मैं गेट पर तेरी राह देखूँगी और हम दोनों मिलकर डिब्बा उतार लेंगे। रही बात रास्ते की, तो तुझे कौन-सा बोझ ढोना है? डिब्बा तो साइकिल पर होगा, तुझे तो बस अपने हाथ से सहाराभर ही देना है।"

माहिर ने माँ की बात सुनकर भी अपने पक्ष को मज़बूती से रखते हुए अपनी बात दोहराई, "लेकिन माँ, मैंने यह काम कभी किया नहीं हैं !"

माँ को इस बार माहिर की बात पर हँसी आ गई। वे बोलीं. "अरे पगले! कोई भी काम व्यक्ति कभी न कभी तो पहली बार करता ही है। तू ही सोच, जब पहली बार तू स्कूल गया था, तो तू कितना रोया था। यदि तू उस दिन स्कूल न जाता तो क्या आज यहाँ तक पहुँच पाता? चल-चल, समय बरबाद मत कर और डिब्बा उठा।"

माँ के आदेश की वजह से माहिर को न चाहते हुए भी राज़ी हो जाना पड़ा। उसने साइकिल निकाली, माँ की मदद से गेहूँ से भरा डिब्बा साइकिल के पीछे रखा और गेहूँ पिसवाने चल पड़ा। आटा चक्की उसके घर से ज़्यादा दूर नहीं थी। इसलिए उसने पैदल चलना ही ठीक समझा। उसने बाएँ हाथ से साइकिल का हैंडल और दाहिने हाथ से डिब्बे को पकड़ रखा था। अपनी शर्म मिटाने के लिए गरदन नीची कर ली थी। हर आने-जाने वाले की निगाहों से वचने का वह असफल प्रयास कर रहा था। चक्की के पास पहुँचकर उसने राहत की साँस ली। डिब्बा उतारकर गेहूँ तुलवाए।

चक्कीवाले ने माहिर से कहा, "भैया! एक-दो आदमी और आ जाएँ, तो चक्की चालू करूँगा। आपको कोई और काम हो, तो वह कर आएँ।"

"अच्छी बात है, मैं आधे घंटे में आता हूँ।" इतना कहकर माहिर ने अपनी साइकिल उठाई। वह सोचने लगा – 'मैंने चक्कीवाले से आधे घंटे में आने के लिए कह तो दिया हैं लेकिन आधे घंटे के समय का क्या उपयोग करूँ?' अभी

5th Hindi Book.indb 34 18-03-2019 17:45:55

घर लौटने से कोई फ़ायदा नहीं है, फिर कहाँ जाऊँ? चलो, अपने सहपाठी संजय से ही मिल आऊँ।

संजय के पिता जी की किराने की दूकान हैं। उसने माहिर को एक बार बताया था कि वह दोपहर को अकसर एक-दो घंटे दूकान पर बैठता है क्योंकि उसके पिता जी उस समय भोजन करने घर जाते हैं।

माहिर ने अपनी साइकिल संजय की दूकान की ओर मोड़ दी। जल्दी ही वह उसकी दूकान पर पहुँच गया। उसने सोचा था कि संजय गद्दी पर बैठा सेठों की तरह अपने सेवकों पर हुक्म चला रहा होगा। पर यह क्या? उसने जो कुछ देखा, वह उसकी सोच के बिलकुल विपरीत था। संजय अपनी दूकान में झाड़ू लगा रहा था। माहिर कब उसकी दूकान पर आकर खड़ा हो गया, उसे इसका अहसास ही नहीं हुआ। अचानक उसकी नज़र ऊपर उठी, तो उसने माहिर को सामने खड़ा पाया। माहिर को देखकर उसे आश्चर्य हुआ।

"अरे माहिर! आ, अंदर आ! एक मिनट, यह कूड़ा फेंक दूँ।" झाड़ू कोने में रखते हुए संजय बोला।

माहिर ने आश्चर्य से पूछा, "संजय ! तू झाड़ू लगा रहा है।"

झाड़ू रखते हुए संजय ने जवाब दिया, "हाँ माहिर, आज सेवक नहीं आया हैं इसलिए मैं ही यह काम कर रहा हूँ और फिर सेवक रहे न रहे, इससे क्या फ़र्क पड़ता हैं। उसके रहने पर भी मैं कई बार झाड़ू लगा चुका हूँ।"

माहिर का मुँह आश्चर्य से खुला का खुला रह गया। उसने फिर पूछा, "तुझे यह सब करने में शर्म नहीं आती ?"

संजय बोला, "अपना काम करने में शर्म कैसी? फिर हमारे स्कूल में भी तो हमें सिखाया जाता हैं कि स्वावलंबी बनो अर्थात् अपना काम आप करो।"

5th Hindi Book.indb 35 18-03-2019 17:46:05

अच्छा मोहिर विस्कुट खाते हो?

"हाँ, खाता हूँ ।" बिस्कुट खाते हुए माहिर लगातार सोच रहा था कि कक्षा में सबका प्रिय संजय अपनी दूकान में झाड़ू लगा रहा हैं । इसे यह काम करने में ज़रा भी शर्म नहीं आ रही है । कितना भला है यह ।

वह आधा घंटा संजय की दूकान पर बैठा । इधर-उधर की कुछ और बातें हुई । उसके बाद वह वहाँ से उठकर चक्की पर जा पहुँचा। चक्कीवाले ने गेहूँ पीसकर, तौलकर पहले ही रख दिए थे। पैसे देकर माहिर ने आटे का डिब्बा साइकिल के पीछे रखा और घर की ओर रवाना हुआ । अब वह गरदन नीची नहीं बल्कि गर्व से ऊँची किए चल रहा था । आज उसे स्वावलंबी होने का सही अर्थ पता चल चुका था ।



अभ्यास

I. कठिन शब्दार्थ

1. नियुक्त – तैनात
2. शर्म – लज्जा
3. दलील - तर्क, बहस
4. प्रयास – प्रयत्न
5. हुक्म – आदेश
6. राहत – चैन
7. स्वावलंबी – आत्मनिर्भर
8. उपयोग – इस्तेमाल
9. गर्व – घमंड
10. आश्चर्य - अचरज

5th Hindi Book.indb 36 18-03-2019 17:46:16

II. प्रश्नों के उत्तर दीजिए -

1. माँ माहिर से गेहूँ पिसवाने के लिए क्यों कह रही थी?
2. माँ ने पहली बार माहिर को क्या कहकर समझाया?
3. माहिर ने अपनी शर्म मिटाने के लिए क्या किया?
4. संजय की दूकान पर पहुँचकर माहिर ने क्या देखा?
5. संजय ने माहिर को स्वावलंबी वनने के लिए कैसे प्रेरित किया?
6. माहिर को काम करने में शर्म क्यों महसूस हो रही थी?
7. माहिर माँ को बार-बर कौन-सी दलील दे रहा था?
8. संजय की बात सुनकर माहिर का मुँह क्यों खुला रह गया?

III. निम्नलिखइत वाक्यों को कोष्ठक में दिए गए क्रिया शब्दों का सही रूप भरकर पूरा कीजिए ।

(पीसने, रखना, रोना, लगाना, छोड़ना)

1. माहिर ! तुम्हें गेहूँ _____ जाना ही पडेगा ।
2. माहिर साइकिल पर गेहूँ का डिब्बा _____ रखा ।
3. पहली बार स्कूल जाने पर तू कितना _____ था ।
4. अरे, संजय! तुम झाडू _____ रहे हो?
5. तुम बहावे बनाना _____ दे ।

5th Hindi Book.indb 37 18-03-2019 17:46:23



गद्य 11 संत पुरंदरदास



पुरंदरदास एक बड़े संत थे। वे भगवान पांडुरंग के भक्त थे। उन्होंने कन्नड़ भाषा में कई पद लिखे थे। लोग आज भी इन पदों को बड़ी श्रद्धा और भक्ति के साथ गाते हैं।

पुरंदरदास का असली नाम श्रीनिवास था। पिता का नाम वरदप्पा और माता का नाम लक्ष्मक्का था। श्रीनिवास को सब लोग शीनप्पा कहते थे। 'सरस्वती' इनकी पत्नी का नाम था। शीनप्पा के बाप सराफ़ थे। शीनप्पा भी शराफ़ था। चार बच्चे भी हुए। शीनप्पा अपने पेशे में बड़ा कुशल था। लेकिन बड़ा कंजूस भी था। उसकी कंजूसी की कहानी दूर-दूर तक फैली थी। कंजूस शीनप्पा महान संत बना – इसकी भी एक कहानी है।

एक दिन एक बूढ़ा ब्राह्मण शीनप्पा की दूकान पर आया। उसने शीनप्पा से अपने बेटे के उपनयन के लिए धन की सहायता माँगी। लेकिन शीनप्पा ने कुछ भी नहीं दिया। तब ब्राह्मण शीनप्पा के घर गया। उसकी पत्नी सरस्वती से सहायता माँगी। सरस्वती बड़ी दयालु थी। उसने ब्राह्मण को अपनी नाक

5th Hindi Book.indb 38 18-03-2019 17:46:37

की नथ दे दी ।

बूढ़ा ब्राह्मण उस नथ को बेचने शीनप्पा की दूकान पर ही आया । नथ को देखते ही शीनप्पा ने पहचान लिया । उसने उसे तिजोरी में बंद कर दिया । ब्राह्मण को दूकान पर ही बिठाकर घर आया । उसने अपनी पत्नी से नथ माँगी तो उसके हाथ-पाँव फूल गये । वह सच भी नहीं कह सकती, झूठ भी नहीं कह सकती । वह आत्महत्या करने तैयार हुई। वह हीरे को पानी में घोलकर पीनेवाली ही थी कि 'टप' की आवाज़ के साथ उसकी नथ विष के प्याले में आ गिरी ।

नथ को देखकर सरस्वती खुशी से फूल गयी । उसने नथ को पति के हाथ में रखा और कहा – यह भगवान श्रीकृष्ण की महिमा है । नथ को देखकर शीनप्पा अचरज में पड़ गया । उसके मुँह से बात नहीं निकली । उसकी आँखें खुल गयीं । उसने भगवान श्रीकृष्ण की महिमा पहचानी । वह विरक्त हो गया । अपनी सारी दौलत गरीबों में बाँट दी । पत्नी और पुत्र के साथ प्रसिद्ध गुरु व्यासरायजी के यहाँ गया । व्यासरायजी ने शीनप्पाजी को दीक्षा दी । तब से वे "पुरंदरदास" नाम से बदल गये ।

संत पुंरदरदास के एक हज़ार से भी ज़्यादा पद मिलते हैं । भक्ति के साथ उनका अनुभव भी इन पदों में मिलता है ।

5th Hindi Book.indb 39 18-03-2019 17:46:47

अभ्यास



I. अर्थ लिखकर वाक्यों में प्रयोग कीजिए -

1. श्रद्धा	2. सराफ़	3. धंधा	4.अनुभवहोना
5. महान	6. सहायता	7. कुछ भी	8. पहचानना
9. तिजोरी	10. हाथ-पाँव	11. फूलना	12. तैयार होना
13. घोलना	14. आवाज़	15. खुशी से फूल आना	

II. पाँच-पांच वाक्यों मं जवाब दीजिए –

1. कंजूस शीनप्पा के बारे में आप क्या जानते हैं?
2. बूढ़ा ब्राह्मण शीनप्पा और उसकी पत्नी के पास क्यों गया और उनसे उसे क्या मिला?
3. सरस्वती क्यों आत्महत्या करने तैयार हुई?
4. भगवान श्रीकृष्ण की महिमा शीनप्पा पर कैसे प्रकट हुई?
5. संत पुरंदरदास के बारे में पाँच वाक्य लिखिए?

III. शीनप्पा संत पुरंदरदास कैसे बना ? संक्षिप्त लिखिए ।

5th Hindi Book.indb 40 18-03-2019 17:46:57

कहानी 12 सांप की बेफकूफी





किसी पेड के खोखले में एक काला साँप रहता था। जब कोई आदमी उस पेड के नजदीक आता, वह तुरंत उसे डस लेता। लोग उस साँप से बहु डरते थे। एक दिन गाँव के कुछ लोगों ने मिलकर उस साँप को मार डालने का निश्चय किया।

लोग लाठियाँ और भाले ले लेकर उस भयानक साँप को मारने निकले। साँप ने जब देखा कि लोग उसे मारने आ रहे हैं, तब वह बहुत धबराया। उतने में एक कुम्हार गधे पर मिट्टी के कुछ बर्तन लादे हुए उस पेड के पास से निकला साँप ने उससे कहा – कुम्हार मामा! आज तुम मेरे जान बचा लो तो मै तुम्हारा बडा एहसान मानूँगा। कुम्हार ने साँप की बात पर विश्वास कर लिया और उसे एक घंडे में बंद कर आगे बढा।

कुछ दूर जाने पर साँप कुम्हार से बोला मामाजी! अब तुम मुझे यहीं छोड दो, मैं किसी बिल में घुस जाऊँगा। कुम्हार ने घडे का मुँह खोल दिया और साँप बाहर निकल आया बाहर निकलते ही साँप अपना फन फैलाकर खडा हो गया और कुम्हार को डसना चाहा। यह देखकर कुम्हार ने साँप से कहा " भाई मेरी भलाई का बदला क्या तुम इसी तरह चुकाओगे? मैंने तुम्हारी जान बचायी

5th Hindi Book.indb 41 18-03-2019 17:47:10

और तुम उसके बदले मेरी जान लेने को तैयार हो गये।"

कुम्हार अपने बचाव का उपाय सोच ही रहा था कि इतने में एक सियार वहाँ आया और उससे पूछा – "क्यों भाई क्या बात है? कुम्हार ने सारा किस्सा उससे कह दिया और बोला " आप ही हम दोनो का इन्साफ कीजिये ।

सियार था बड़ा चालाक । बोला "यह बात मेरी समझ में ही नहीं आता कि इतना बडा साँप इस छोटे से घडे में कैसे समा सकता है । सियार की बात सुनकर साँप ने कहा – "क्यों नही मैं इस घडे में तो था" सियार बोला "मुझे विश्वास नहीं होता । तुम फिर से इस घडे में घुसो जिससे सब बातें मेरी समझ में आ जाएँ और मैं तुम दोनों का फैसला कर दूँ।"

ज्यों ही साँप घडे के अंदर घुसा, त्यों ही सियार ने कुम्हार से कहा – अरे भलेमानस! अब क्यों नहीं इस घडे का मुँह कपडे से जल्दी बंदकर देता, खडे-खडे क्या देख रहा है?

कुम्हार ने झट कपडे से घडे का मुँह बंद कर दिया और उसे ले जाकर गहरे पानी में डुबो दिया ।

भलाई के बदले बुराई करनेवाले का यही हाल होता है।



5th Hindi Book.indb 42 18-03-2019 17:47:21

अभ्यास



I. कठिन शब्दार्थ –

1. किस्सा – कहानी
2. भलाई – अच्छाई
3. उपाय – योजना
4. बेफकूफ़ी – मूर्खता
5. निश्चय – तय
6. साँप – सर्प
7. घबराया – डरा
8. पेड - वृक्ष
9. कुम्हार – मिट्टी का बर्तन बनानेवाला
10. भले मानस अच्छे दिलवाला
11. बचाव – रक्षा

II. प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. साँप ने क्या करता था?
2. साँप का स्वभाव कैसा था ?
3. गाँववालों ने साँप को क्यों मारना चाहा?
4. साँप ने कुम्हार से क्या कहा?
5. कुम्हार ने साँप की सहायता क्यों की?
6. साँप की बेफकूफी क्या थी?
7. सियार ने कुम्हार को कैसे बचाया?

5th Hindi Book.indb 43 18-03-2019 17:47:30

कहानी 13 शिवाजी को शिक्षा





सायंकाल का समय था । घनघोर वर्षा हो रही थी । बिजली ज़ोर-ज़ोर से कड़क रही थी तथा मेघों की भयानक गरज़ना ने वातावरण को भयावह बना दिया था। एक किसान दंपती अपनी झोंपड़ी में बैठे दुख-सुख की बातें कर रहे थे । वर्षा के कारण आज किसान अपने खेत पर काम करने नहीं जा सका था । उसकी पत्नी रात का भोजन तैयार कर रही थी ।

अचानक किसी ने दरवाज़ा खटखटाया और आवाज दी "अंदर कोई है?" किसान ने दरवाज़ा खोलकर देखा तो सामने बीस-इक्कीस वर्ष का एक युवक खडा था । वह गोरे रंग का था । उसका कद सामान्य था । उसकी आँखों में आत्मविश्वास टपक रहा था। वर्षा में उसके कपडे पूरी तरह भीग गए थे। कपड़ों से पानी टपक रहा था। वह बहुत थका हुआ लग रहा था । उसकी कमर पर तलवार लटक रही थी । देखने में वह सिपाही प्रतीत हो रहा था । सामने उसका घोड़ा खड़ा था। किसान ने उससे पूछा – "क्या बात है भाई?"

युवक बोला – "मैं एक राहगीर हूँ । मार्ग भटक गया हूँ । वर्षा में बुरी तरह भीग गया हूँ । मैं और मेरा घोड़ा बुरी तरह थक गए हैं । आज की रात बिताने के लिए जगह चाहिए ।"

5th Hindi Book.indb 44 18-03-2019 17:47:44

किसान के कुछ कहने से पूर्व उसकी पत्नी ने उसे अंदर बुलाते हुए कहा – "भाई, आओ। तुम अंदर आ जाओ । वर्षा में कब तक भीगते रहोगे ।"

किसान की पत्नी ने उसे अदंर बुला लिया। उस युवक को उसने बदलने के लिए कपड़े दिए । युवक के भीगे कपड़ों को आग के पास टाँग दिया, जिससे वे जल्दी सूख जाएँ । किसान ने युवक के घोड़े को आँगन में बाँध दिया और खाने के लिए चारा दे दिया।

किसान ने युवक से पूछा – "तुम इतनी तेज़ वर्षा में कहाँ जा रहे थे?"

युवक बोला – "कुछ जरूरी काम था। जब मैं घर से निकला था, उस समय वर्षा नहीं हो रही थी । मैं मार्ग में भटक गया और अब वर्षा भी इतनी तेज़ हो रही है कि आगे चलना मुश्किल हो गया हैं ।" किसान की पत्नी बोली – "भूख लगी होगी, खाना खा लो ।"

युवक ने कहा – "नहीं – नहीं, मै खाना नहीं खाऊँगा। मैं सोना चाहता हूँ ।"

किसान बोला – "यह नहीं हो सकता । हम निर्धन अवश्य है, लेकिन घर आए अतिथि को भूखा थोड़े ही सोने देंगे । जो कुछ रूखा –सूखा हम खाते हैं, वही तू भी खा लो ।"

युवक इस प्रेम भरे आग्रह को टाल न सका। किसान की पत्नी ने युवक तथा किसान के आगे केले के पत्ते रख दिए। पत्तों पर उसने भात परोसा और कढ़ी लाने गई।

शीघ्र ही वह कढ़ी लाई और परोसने के लिए युवक के पास आकर रुकी । स्त्री ने भात पर कढ़ी परोसी तो वह पत्तल पर बहने लगी । युवक उसे एक ओर से रोकता तो वह दूसरी ओर से बहने लगती । युवक की समझ में नहीं आ रहा था कि वह कढ़ी को रोकने के लिए क्या करे?

युवक की परेशानी देखकर किसान की पत्नी को हँसी आ गई । किसान तो

5th Hindi Book.indb 45 18-03-2019 17:47:54

चुपचाप देखता रहा और कुछ न बोला, पर उसकी पत्नी से चुप न रहा गया। वह बोली – "तुम तो शिवाजी की तरह बुद्धू हो।"

शिवाजी का नाम सुनते ही वह युवक चौंक गया और बोला – "क्यों, शिवाजी बुद्धू कैसे हैं ?"

स्त्री बोली – "भात में कढ़ी लेने से पहले गड्ढा कर लेना चाहिए। नहीं तो कढ़ी रुक नहीं सकती, तुम्हें इतना भी नहीं मालूम?"

किसान अपनी पत्नी से बोला – "तुम्हें यह नहीं मालूम कि ये बड़े आदमी हैं। बड़े आदमी थाली में खाते हैं। अगर इन्हें पत्तल में खाना नहीं आता तो इसमें हँसने की क्या बात हैं?"

युवक बोला – "मुझे तो कढ़ी-भात खाना ही नहीं आता, इसलिए मैं तो बुद्धू हूँ, लेकिन यह शिवाजी कौन है? उसे आप बुद्धू क्यों कहती हैं?"

किसान ने बात को टालना चाहा, परंतु युवक यह जानना चाहता था कि शिवाजी बुद्धू कैसे है?

किसान की पत्नी बोली – "शिवाजी महाराष्ट्र पर अपना राज्य कायम करना चाहता है, इसलिए सुलतान से लड़ता है।" युवक ने पूछा – "सुलतान से लड़ना क्या पागलपन हैं ?"

स्त्री बोली – "यह बात नहीं है। वह तो बहुत बहादुर है। देश में उसके जैसा दूसरा शूरवीर कोई नहीं है । वर्षों के बाद ऐसा योद्धा पैदा हुआ है, जो देश पर स्वराज्य कायम करना चाहता है।"

"फिर तुमने उसे बुद्धू क्यों कहा? युवक ने पूछा ।"

स्त्री बोली – "मैने उसे बुद्धू इसलिए कहा, क्योंकि उसकी लड़ाई करने का तरीका गलत हैं।"

5th Hindi Book.indb 46 18-03-2019 17:48:06

"तरीका गलत हैं। यह कैसे ?" युवक ने पूछा।

स्त्री बोली – "शिवाजी गाँव पर कब्जा तो कर लेता है, परंतु किलों पर अधिकार नहीं करता। सुलतान के सैनिक मौका मिलते ही किले से निकलते हैं और मार-काट करते हैं। फिर शिवाजी को पीछे हटना पड़ता है। वह यह नहीं समझता कि स्वराज्य कायम करना है तो पहले किले पर कब्जा करना चाहिए।"

युवक बोला – "किलो पर कब्ज़ा करना आसान नहीं है और इसमें समय भी लगता है।"

स्त्री ने कहा – "यह ठीक है, परंतु किलो पर कब्जा करना आवश्यक है। किलों पर अधिकार किए बिना स्वराज्य कायम नहीं किया जा सकता। जैसे भात में गड्ढा किए वगैर कढ़ी बह जाती है, उसी प्रकार किलो के बिना गाँव भी हाथ से निकल जाते हैं। जिसके पास किले होंगे, उसी का महाराष्ट्र पर शासन होगा।"

युवक को स्त्री की बात समझ आ गई। खाना खाने के बाद उस स्त्री ने युवक का बिस्तर लगा दिया, पर युवक को रात-भर नींद नहीं आयी। सुबह होने पर वह चुपचाप उठकर चला गया।

इस घटना के कई वर्ष बीत गए। किसान दंपती वृद्ध हो गए। महाराष्ट्र में शिवाजी का शासन कायम हो गया। उनके राज्याभिषेक की तैयरियाँ हो रही थीं।

एक दिन बूढ़ा किसान अपनी झोंपड़ी के बाहर बैठा था। उसी समय बहुत-से घुड़सवार वहाँ आकर रुके और किसान से कुछ पूछा। घुड़सवारों के नेता ने कहा – "यह वही व्यक्ति है, जिसे शिवाजी ने आमंत्रित किया है।"

'शिवाजी ने आमंत्रित किया है।' यह सुनते ही किसान घबरा गया और

5th Hindi Book.indb 47 18-03-2019 17:48:16

बोला – "क्या बात है? मुझसे कोई अपराध हुआ है, जो शिवाजी ने मुझे बुलाया है?"

सिपाहियों के सरदार ने कहा – "हमें छत्रपति शिवाजी ने आज्ञा दी है कि हम आपको उनके द्वारा भेजी हुई भेंट दे और आपको अपने साथ उनके राज्याभिषेक में रायगढ़ ले आएँ।"

सिपाहियों ने चाँदी के दो थाल किसान के सामने रखे। एक थाल में किसान के लिए धोती, कुरता और दूसरे थाल में उसकी पत्नी के लिए साड़ी व आभूषण रखे थे।

किसान ने कहा – "महाराज ने हमारे लिए यह सब क्यों भेजा? हमें तो वे जानते भी नहीं है।"

सरदार बोला – "महाराज ने हमें तो केवल इतना ही बताया है कि आपके कढ़ी-भात"के सबक के कारण ही स्वराज्य कायम हो सका है। उन दोनों को यह आदर उसी सुझाव के लिए दिया जा रहा है। महाराज ने आप दोनों से राज्याभिषेक में पधारने का आग्रह किया है। आपकी यात्रा का सारा प्रबंध हमने कर दिया है।

अचानक किसान को वह घटना याद आ गई। उन्हें वह युवक भी याद आ गया। किसान ने पूछा – "यह बात महाराज तक कैसे पहुँची।"

सरदार ने कहा – "उस दिन जो युवक आपके घर वर्षा के कारण रास्ता भटककर रुके थे और जिन्होंने कढ़ी-भात खाया था।, वह कोई और नहीं, स्वयं शिवाजी थे।"

सरदार की बात सुनकर किसान दंपती हैरान रहे गये।

शिक्षा – अनुभव शिक्षा जीवन में सदा काम आती है।

5th Hindi Book.indb 48 18-03-2019 17:48:27

अभ्यास



I. कठिन शब्दार्थ –

1. घनघोर – भयंकर
2. मेघ – बादल
3. भयावह – भयानक
4. प्रतीत – ज्ञात-मालुम
5. राहगीर – पथिक, यात्री
6. आग्रह – हठ
7. भात – उबला चावल
8. शूरवीर – योद्धा
9. स्वराज्य – अपना राज्य
10. कब्ज़ा – अधिकार
11. राज्याभिषेक – राजगद्दी पर बैठने की एक रस्म

II. सही विकल्प पर चिह्न (✓) लगाइए –

1. किसान दंपती अपनी झोंपड़ी में बैठे क्या कर रहे थे?
   1.☐ भोजन कर रहे थे 2.☐भजन गा रहे थे
   3.☐ दुख-सुख की बातें कर रहे थे
2. किसान के घर आया युवक किस आयु का था ?
   1.☐ अठारह वर्ष का 2.☐ बाईस वर्ष का
   3.☐ बीस-इक्कीस वर्ष का
3. युवक का रंग कैसा था?
   1. ☐ साँवला 2.☐ गोरा 3. ☐ काला
4. युवक की आँखों से क्या टपक रहा था ?
   1.☐ आँसू 2.☐ पानी
   3.☐ आत्मविश्वास
5. युवक की कमर पर क्या लटक रही थी?
   1.☐ कटार 2.☐ तलवार 3.☐ धूरी
6. किसान ने युवक के घोड़े को कहाँ बाँधा?
   1.☐ पेड़ से 2.☐ आँगन में
   3.☐ छप्पर के नीचे

5th Hindi Book.indb 49 18-03-2019 17:48:34

III. किसने, किससे कहा? सही विकल्प पर चिह्न (✓) लगाईए

1. क्या बात है भाई?

   1. □ किसान की पत्नी ने युवक से 2.□ किसान ने युवक से

2. वर्षों के बाद ऐसा योद्धा पैदा हुआ है, जो देश पर स्वाराज्य कायम करना चाहता है।

   1.□ किसान की पत्नी ने युवक से 2.□ किसान ने युवक से

3. यह वही व्यक्ति है, जिसे शिवाजी ने आमंत्रित किया है।

   1.□ घुड़सवारों के नेता ने 2.□ एक सिपाही ने किसान से।

IV. प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. युवक किसान के घर क्यों गया ?
2. युवक के कार्य से किसान की पत्नी को हँसी क्यों आई?
3. किसान की पत्नी ने शिवाजी को बुद्धू क्यों कहा?
4. सिपाही किसान के घर क्यों आए थे ?
5. इस कहानी से हमें क्या शिक्षा मिलती है?

5th Hindi Book.indb 50 18-03-2019 17:48:43

तीसरा सत्र

Term III



पद्य 14 आ रही रवि की सवारी





आ रही रवि की सवारी।
नव-किरण का रथ सजा है,
कलि-कुसुम से पथ सजा है,
बादलों-से अनुचरों ने स्वर्ण की पोशाक धारी।
आ रही रवि की सवारी।
विहग, बंदी और चारण,
गा रही है कीर्ति-गायन,
छोड़कर मैदान भागी, तारकों की फ़ौज सारी।
आ रही रवि की सवारी।
चाहता, उछलूँ विजय कह,
पर ठिठकता देखकर यह-
रात का राजा खड़ा है, राह में बनकर भिखारी।
आ रही रवि की सवारी।

- हरिवंशराय बच्चन



5th Hindi Book.indb 52 18-03-2019 17:49:12

अभ्यास



I. कठिन शब्दार्थ

1. रवि - सूर्य, सूरज
2. कुसुम - फूल, पुष्प, सुमन
3. पोशाक - वस्त्र
4. विहग - पक्षी, चिड़िया
5. फौज़ - सेना
6. कीर्ति-गायन - प्रशंसा के गीत
7. अनुचर - दास, अनुकरण करनेवाला
8. तारक – तारे, नक्षत्र
9. उछलना - कूदना
10. ठिठकना - रुक जाना

II. निम्नलिखित पद्यांश का भाव स्पष्ट कीजिए

(क) नव-किरण का रथ सजा है,
कलि-कुसुम से पथ सजा है,
बादलों-से अनुचरों ने स्वर्ण की पोशाक धारी ।
आ रही रवि की सवारी ।

(ख) विहग, बंदी और चारण,
गा रही है कीर्ति-गायन,
छोड़कर मैदान भागी, तारकों की फ़ौज सारी।
आ रही रवि की सवारी।

II. 'आ रही रवि की सवारी' कविता का सारांश लिखिए ।

5th Hindi Book.indb 53 18-03-2019 17:49:23

पद्य 15 कबीर के दोहे



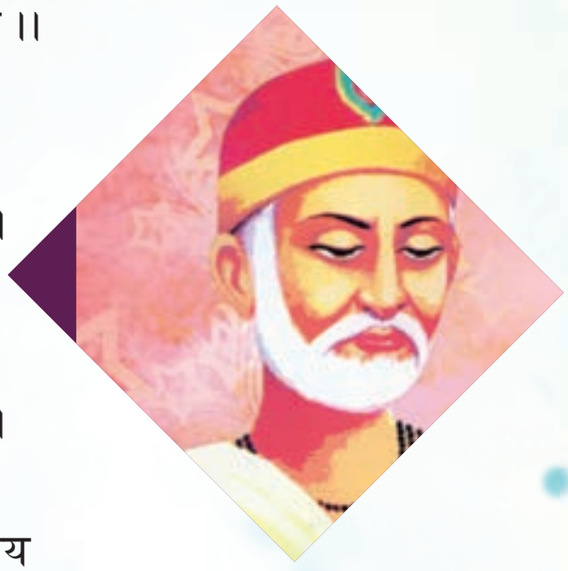

1. दुख में सुमिरन सब करै, सुख में करै न कोय ।
   जो सुख में सुमिरन करै, दुख काहे को होय ।।

2. काल करै सो आज कर, आज करै सो अब ।
   पल में परलय होएगी, बहुरि करेगा कब ।।

3. रुखा-सूखा खायिकै, ठंडा पानी पीव ।
   देखी बिरानी चूपडी, मत ललचावे जीव ।।

4. बुरा जो देखन मैं चला बुरा न मिलिया कोय
   जो दिल खोजा अपना मुझसा बुरा न कोय ।।

5. सब धरती कागद करूँ लेखनी सब बनराय।
   सात समुद्र की मसि करूँ गुरुगुन लिखा न जाय ।।

6. निंदक नियरे राखिए, आँगन कूटी छबाय ।
   बिन साबुन पानी बिना, निरमल करै सुभाय ।।

7. बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर ।
   पंथी को छाया नहीं, फल लागे अति दूर ।।

5th Hindi Book.indb 54 18-03-2019 17:49:36



गद्य 16 कबड्डी

परिचय –

जीवन में खेलों का बड़ा महत्व है। खेल हमारे तन और मन को स्वस्थ रखते हैं । कबड्डी हमारे देश का बहुत पुराना खेल है। हमारे देश में कोई भी ऐसा प्रदेश नहीं है, जहाँ यह खेल न खेला जाता हो । अलग-अलग राज्यों में इसके भिन्न-भिन्न नाम हैं। इस खेल को उत्तर प्रदेश में "कबड्डी", राजस्थान में "भडुडू", बंगला में "हुडुडु", तमिलनाडु और कर्नाटक में "सडुगुडू" तथा गुजरात और महाराष्ट्र में "हुतुतुतु" कहते हैं । गाँव के लोगों का तो यह बहुत ही प्रिय खेल है। इस खेल की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें खेलने के लिए किसी वस्तु की जरूरत नहीं होती। कबड्डी का खेल अत्यंत रोचक और उत्साहपूर्ण होता है। इस खेल में दो दल होते हैं। प्रत्येक दल में सात-सात खिलाड़ी होते हैं। मैदान के बीच में एक लाइन खींच दी जाती है । दोनों दल लाईन के आर-पार खड़े हो



5th Hindi Book.indb 55 18-03-2019 17:49:49

जाते हैं। यह खेल कुल 40 मिनट का होता है।

विद्यालय में कबड्डी खेल का वर्णन

एक विद्यालय में छठी और सातवीं कक्षा के विद्यार्थियों में कबड्डी का मैच था। चार बजे तक सभी शिक्षक व विद्यार्थी खेल के मैदान में इक्ट्ठे हो गए। रेफरी ने सींटी बजाई। दोनों दलों के खिलाड़ी अपने-अपने पालों में खड़े हो गए। छठी कक्षा के दल का नेता चतुर भाई और सातवीं कक्षा के दल का नेता शक्ति सिंह था। इन्हीं नेताओं के नाम पर दोनों दलों को "चतुर दल" और "शक्ति दल" नाम रखा गया। खेल शुरु हुआ। दोनों ओर के खिलाड़ी बारी-बारी से "कबड्डी-कबड्डी" बोलते हुए एक दूसरे के पाले में जाने लगे। सभी खिलाड़ी चौकन्ने थे। विरोधी-दल के खिलाड़ियों को छूकर आने के लिए सबके हाथ-पाँव फड़क रहे थे। खेल पूरे जोश पर था। जब भी कोई खिलाड़ी पकड़ा जाता तो देखने वाले खुशी से चिल्ला उठते थे। रास्ते पर चलते राहगीर भी कबड्डी देखने के लिए रुक जाते थे।

अचानक शक्ति दल का एक दुबला-पतला खिलाड़ी चतुर दल के पाले में आ धमका। उसमें गजब की फुर्ती थी। "कबड्डी-कबड्डी" बोलते हुए वह जिस ओर बढ़ता, उस ओर के खिलाड़ी डर के मारे पीछे हट जाते। चतुर दल के खिलाडियों ने उसे पकडने के लिए कई चाले चलीं लेकिन उसे कोई भी न पकड पाया। चतुर दल के खिलाड़ी को छूकर वह बिजली की गति से अपने दल में लौट गया। इससे शक्ति दल के खिलाड़ियों में खुशी की लहरें दौड़ गईं और चतुर दल में सन्नाटा छा गाया।

शक्ति दल के खिलाड़ी अपने को संभल ही रहे थे कि चतुरभाई, "कबड्डी-कबड्डी" कहते हुए छलांग लगाकर शक्ति दल में घुस गया। विरोधी-दल के चार खिलाड़ियों को उसने एक ही झपेटे में छू लिया। शक्तिसिंह इसे कैसे सहन कर सकता था? उसने झपटकर चतुरभाई को पकड़ लिया। लेकिन चतुरभाई भी

5th Hindi Book.indb 56 18-03-2019 17:50:01

कुछ कम न था। उसने छलांग लगाई और अपने पाले में लौट आया। इस प्रकार शक्ति दल के छक्के छूट गए और उसके खिलाड़ियों में खलबली मच गई। थोड़ी देर में उस दल के बचे हुए खिलाड़ी भी आउट हो गए और "चतुर दल" शान के साथ जीत गया। सभी दर्शक चतुरभाई की कुशलता की प्रशंसा कर रहे थे।

खेल पूरा होने के बाद विद्यार्थियों एवं अध्यापकों की एक सभा हुई। सभा में व्यायाम-शिक्षक ने खेलों का महत्व समझाया और बताया कि कबड्डी खेलते समय बनियन और निक्कर पहनना चाहिए। हाथ-पाँव के नाखून कटे हुए होने चाहिए। धातु से बनी कोई भी चीज़ नहीं पहननी चाहिए। शरीर पर तेल या क्रीम जैसी कोई भी चिकनाई मलना मना है। खिलाड़ियों के लिए सबसे अधिक महत्व की बात है कि वे रेफरी के निर्णय को स्वीकार करें और हमेशा खेल की भावना से खेलें।

सभी विद्यार्थियों ने तालियाँ बजा-बजा कर विजयी दल की तारीफ़ की और अपनी प्रसन्नता प्रकट की। प्रिंसिपल ने भी सभी खिलाडियों को शाबाशी दी और चतुर दल को जीत के लिए इनाम देने की घोषणा की।

अभ्यास



I. हिन्दी में अर्थ लिखिए।

1. महत्व	2. स्वस्थ	3. प्रिय	4. अत्यंत
5. रोचक	6. चिल्ला उठना	7. सन्नाटा	8. कुशलता
9. दल	10. प्रसन्नता		

II. वाक्यों में प्रयोग कीजिए –

1. प्रत्येक 2. खुशी की लहरें दौड़ना 3. सन्नाटा छाना
4. प्रशंसा करना 5. इनाम देना

5th Hindi Book.indb 57 18-03-2019 17:50:13

III. गद्यांश पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजीए ।

"जीवन में खेलों का बड़ा महत्व है। खेल हमारे तन और मन को स्वस्थ रखते हैं। कबड्डी हमारे देश का बहुत पुराना खेल हैं। हमारे देश में कोई भी ऐसा प्रदेश नहीं है, जहाँ यह खेल न खेला जाता हो। अलग-अलग राज्यों में इसके भिन्न-भिन्न नाम है। इस खेल को उत्तर प्रदेश में "कबड्डी", राजस्थान में "भडुडू", बंगला में "हुडुडु", तमिलनाडु और कर्नाटक में "सडुगुडू" तथा गुजरात और महाराष्ट्र में "हुतुतुतु" कहते हैं"

1. जीवन में किसका बड़ा महत्व हैं ?
2. खेल हमारे तन और मन को कैसे रखते हैं?
3. तमिलनाडू और कर्नाटक में कबड्डी का क्या नाम हैं?

IV. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में दीजिए ।

1. कबड्डी के दो भिन्न नाम लिखिए।
2. कबड्डी कितने मिनटों का खेल है और प्रत्येक दल में कितने खिलाड़ी होते हैं?

V. 'कबड्डी ' पाठ का सारांश लिखिए ।

5th Hindi Book.indb 58 18-03-2019 17:50:21



गद्य 17 मेवाड़ का गौरव

राठौर वंश में उत्पन्न यशवंत राय मेवाड़ के प्रसिद्ध राजा थे। उनका विवाह सिसौदिया वंश की राजकुमारी महामाया से हुआ था। यशवंत राय अपनी देशभक्ति तथा वीरता के लिए विख्यात थे। विवाह के कुछ दिनों के बाद ही उन्हें मुगलों से युद्ध करने जाना पड़ा। उनकी पत्नी ने विजय-कामना से उनके माथे पर तिलक लगाया तथा थाली में पूजा की सामग्री रखकर उनकी यथाविधि पूजा की।

अपने पति को युद्ध-भूमि में भेजकर महामाया के मन की शांति भंग हो गई। वह दिन-रात उठते-बैठते पति की विजय तथा अपने सुहाग की रक्षा के लिए ईश्वर से प्रार्थना करती। युद्ध-भूमि में जाने के तीसरे दिन वह एकांत में पति की चिंता में डूबी हुई थी कि अचानक उसे बाहर शोर सुनाई दिया। उसने दासी को बुलाया और पूछा – "यह कैसा कोलाहल है ? क्या शत्रु-सेना हमारे राज्य में प्रवेश कर गई है? जाकर देखो।"

तभी एक सैनिक आया और उसने महामाया का अभिवादन करते हुए कहा – "महारानी की जय हो! महाराज यशवंत राय युद्ध-भूमि से वापस पधार रहे हैं।"



5th Hindi Book.indb 59 18-03-2019 17:50:35

यह समाचार सुनकर महामाया फूली न समाई । उसने सैनिक को प्रसन्नतापूर्वक कहा – "दुर्ग-रक्षक को महाराज के स्वागत की तैयारी के लिए कहो । उनके स्वागत में तोपें दागना आरंभ कर दो। दासी मंगला, तू उनकी पूजा के लिए तैयारी कर । आज हमारे राज्य में दीपावली मनाई जाएगी । हाँ सैनिकों के उपचार का प्रबंध करना न भूलना । जानती नहीं है, महाराज इतने प्रबल शत्रु को हराकर लौट रहे हैं ।"

दासी ने विनम्रता से कहा – "महारानी, महाराज के शरीर पर अनगिनत घाव हैं।" महामाया ने विकल होकर कहा – "जाओ, जल्दी जाओ, राजवैद्य को उनके उपचार के लिए बुला लाओ। सेना की अधिक हानि तो नहीं हुई है?"

दासी ने सिर झुकाकर कहा - "बचे हुए सैनिकों को उंगली पर गिना जा सकता है। वे भी सिर से पैर तक घायल हैं।"

महारानी ने चिंतित स्वर में कहा - "तू यह सब कैसे जानती है?" दासी ने झिझकते हुए कहा – "आपके आदेशानुसार मैं पूजा की थाली सजाने के लिए बाहर गई तो एक सैनिक ने मुझे यह सब समाचार बताया ।"

महामाया ने सैनिक को बुलाकर पूछा - "महाराज यशवंत राय ने शत्रु से कैसे लोहा लिया?" सैनिक शीघ्र ही बोला - "महारानी, महाराज शत्रुओं के दल में हिरनों के झुंड में सिंह की भाँति घुस गए । शत्रु की सेना असंख्य थी । महाराज का दोष नहीं ।"

यह सुनकर महामाया ने हैरान होकर कहा - "तुम कहना क्या चाहते हो?" साफ़ -साफ़ कहो।"

सैनिक ने भयभीत होकर कहा – "सेवक का अपराध क्षमा हो। महाराज युद्ध-भूमि से हारकर आए हैं।" महामाया यह सुनकर स्तब्ध रह गई तथा व्याकुल होकर बोली –"यह असत्य है, मेरा पति युद्ध-भूमि से हारकर जीवित नहीं लौट सकता।"

5th Hindi Book.indb 60 18-03-2019 17:50:46

सैनिक ने पुनः कहा – "महारानी, समय पर सहायता न मिलने से महाराज को युद्ध-भूमि में पीठ दिखानी पड़ी ।"

महामाया ने दासी को किसी भी प्रकार की खुशी मनाने को मना कर दिया। उसे पूजा का थाली खाली करने के लिए कहा। सैनिकों से तोपें न दागने के लिए कहा।

उसी समय दासी ने राजवैद्य के आने की सूचना दी। महारानी ने उन्हें भी उपचार न करने का आदेश दिया । इतने में दुर्ग-रक्षक ने दुर्ग का फाटक खोलने की अनुमति माँगी, परंतु महामाया ने उसे फाटक न खोलने की आज्ञा दी।

दुर्ग-रक्षक ने सहमते हुए कहा – "महाराज तो दुर्ग के फाटक तक आ पहुँचे हैं।"

महामाया ने क्रोध से कहा – "वे तो युद्ध में काम आ चुके हैं।" दुर्ग-रक्षक चुपचाप वहाँ से चला गया। इस प्रकार महाराज यशवंत राय तथा उनके सैनिक छह मास तक दुर्ग के फाटक पर ही पड़े रहे। महामाया अभी भी क्रोध व तनाव में थी । अब यशवंत राय की माता से सहन करना कठिन हो गया। वह महामाय के पास आकर बोली – "पुत्री, यह मैं क्या सुन रही हूँ? महाराज छह मास से घायल अवस्था में दुर्ग के बाहर ही पड़े हैं, उन पर दया करो।"

महामाया ने लंबी साँस लेते हुए कहा – "वे मेरे पति नहीं है।" महामाया की सास ने उसे समझाते हुए कहा – "युद्ध में हार-जीत तो होती ही रहती है। उन्हें अपनी हार पर कितना दुख होगा । उन्होंने अपनी भूल का प्रायश्चित्त कर लिया है।"

महामाया ने इस शर्त पर दुर्ग-रक्षक को फाटक खोलने की अनुमति दी कि वे उसके सम्मुख नहीं आएँगे तथा स्वस्थ होते ही फिर युद्ध करने जाएँगे तथा जीतकर लौटेंगे ।

इस प्रकार दुर्ग का फाटक खोल दिया गया । कुछ दिन के उपचार के

5th Hindi Book.indb 61 18-03-2019 17:50:56

बाद राजा यशवंत राय पुनः सैनिकों के साथ युद्ध-भूमि में गए तथा शत्रुओं को हराकर लौटे। महामाया को अपने कठोर व्यवहार पर गर्व था। अब उसे धरती माँ की गोद में सिर छिपाने की आवश्यकता नहीं थी। उसे विश्वास हो गया कि अब यदि शत्रु उसके दुर्ग पर आक्रमण कर उसका अपहरण करने आएगा तो उसका पति उससे टक्कर लेकर उसकी रक्षा कर सकेगा।

फिर महामाया ने पूजा की थाली लेकर अपने पति की आरती उतारी। सैनिकों को तोपें दागकर महाराज का स्वागत करने के लिए कहा। सारे राज्य में दीवाली मनाई गई, गरीबों को भोजन खिलाया गया तथा उन्हें वस्त्र भी दिए गए।

रात को महाराज सोने के लिए शयन-कक्ष में आए तो मुस्कराते हुए महामाया से बोले – "महारानी, मैं तुम पर गर्व करता हूँ।" महामाया ने सिर झुकाकर कहा – "स्वामी, दासी को दंड दीजिए। मैं आपकी सेवा में उपस्थित हूँ।" यशवंत राय ने आदरपूर्वक कह -- "तुम सिसौदिया वंश तथा राठौर वंश की शान हो और मेवाड़ की आन-बान हो। "महामाया ने धीमे स्वर में कहा - "मैंने महाराज का तिरस्कार किया है।" महाराज ने उसकी प्रशंसा करते हुए कहा - "तुमने मेरा नहीं, मेरी कायरता का तिरस्कार किया है।" महारानी ने पीड़ित स्वर में कहा - "इतना घायल होने पर भी आपको छह मास तक दुर्ग के अंदर आने नहीं दिया। क्या आप दासी को क्षमा कर देंगे?" महाराज ने परिहास करते हुए कहा – "मैं तो खुद आपका दास हूँ।" इस पर महारानी भी हँस दी।

महाराज यशवंत राय ने उसकी बात का समर्थन किया। इस प्रकार महामाया ने सिसौदिया वंश तथा राठौर वंश के राजपूतों की लाज रख ली। यही महामाया बाद में 'महारानी सिसौदिनी' के नाम से इतिहास में प्रसिद्ध हुई।

शिक्षा – देश के गौरव को बचाने के लिए प्राणों का मोह त्याग देना चाहिए। कायरता कमजोरी है। वीरता बहादूरी है।

5th Hindi Book.indb 62 18-03-2019 17:51:08

अभ्यास



I. कठिनार्थ शब्द

1. विख्यात – प्रसिद्ध, मशहूर
2. यथाविधि – विधिपूर्वक, नियमानुसार
3. कोलाहल - शोर, हल्ला
4. विकल – व्याकुल, परेशान
5. आन – बान – शान
6. तिरस्कार – अपमान, अनादर
7. परिहास – हँसी - मज़ाक
8. समर्थन - अनुमोदन

II. सही विकल्प पर चिह्न (✓) लगाइए –

1. राजकुमारी महामाया किस वंश की थी?

1. □ राठौर वंश की 2.□ सिसौदिया वंश की 3.□ सूर्यवंश की

2. विवाह के कितने दिनों के बाद यशवंत राय को मुगलों से युद्ध करना पड़ा ?

1. □ एक महीने बाद 2.□बीस दिन बाद 3.□ कुछ दिनों के बाद

3. महामाया दिन-रात किससे प्रार्थना करती थी?

1.□ अपने पतिसे 2.□ईश्वर से 3. □ माँ पार्वती से

4. महामाया ने किस दासी से पूजा की तैयारी के लिए कहा?

1.□ चपला से 2.□ कमला से 3.□ मंगला से

5. दुर्ग के फाटक खोलने के लिए महामाया को किसने समझाया?

1.□ महामाया ससुर से 2.□ महामाया की अंतरात्मा

3.□ महामाया की सास ने

5th Hindi Book.indb 63 18-03-2019 17:51:14

III. किसने, किससे कहा? सही विकल्प पर चिह्न (✓) लगाईए

1. क्या शुत्रु-सेना हमारे राज्य में प्रवेश कर गई है??

1.☐ महाराज यशवंत राय ने सैनिक से

2.☐ महामाया ने दासी से

2. बचे हुए सैनिकों को उंगली पर गिना जा सकता है।

1.☐ दासी ने महामाया से 2.☐ सैनिक ने महामाया से

3. महाराज तो दुर्ग के फाटक तक आ पहुँचे हैं ।

1.☐ सैनिक ने महामाया से 2.☐ दुर्ग-रक्षक ने महामाया से

IV. प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. महामाया ने पति को युद्ध के लिए किस प्रकार विदा किया?
2. महामाया ने महाराज यशवंत राय को दुर्ग में क्यों नही आने दिया?
3. महामाया ने राजा यशवंत राय को दुर्ग में आने की अनुमति किस शर्त पर दी?
4. विजय प्राप्त करने के बाद मेवाड़ के दुर्ग में किस प्रकार खुशी मनाई गई?
5. इस कहानी से हमें क्या शिक्षा मिलती है? अपने शब्दों में बताइए ?

5th Hindi Book.indb 64 18-03-2019 17:51:24

कहानी 18 नाना फडणवीस की चतुराई





पेशावा राज्य के दीवान नाना फडणवीस की चतुराई और राजनैतिक निपुणता का लोहा अँग्रेज़ भी मानते थे। उनके संबंध में एक कहावत प्रसिद्ध थी – "जब-तक नाना, तब-तक पूना" अर्थात जब तक नाना फडणवीस जीवित है, तभी तक पेशावा का राज्य कायम रहेगा।

पेशावा राज्य के अंतिम दिनों में आपसी झगड़ों के कारण राज्य की जड़े खोखली हो गई थीं। सारे सरदार अपने व्यक्तिगत स्वार्थ की बात सोचते थे। जनता के हित के बारे में सोचने की किसी को फुरसत नहीं थी। पेशवा का राज्य कायम था तो केवल नाना फडणवीस के कारण। नाना की चतुराई के अनेक किस्से प्रसिद्ध थे. राजा-महाराजा उनकी बुद्धि की परीक्षा लेने के लिए उनसे तरह-तरह के प्रश्न पूछते थे।

एक बार निज़ाम ने एक बहुत बड़ा हाथी भेजा और नाना से उसका वज़न बताने को कहा। नाना ने थोड़ी देर सोच-विचार किया और महावत से कहा –"कल तुम नदी तट पर अपने हाथी को लेकर आ जाना। मैं तुम्हें वहीं हाथी का वज़न बताऊँगा।"

अगले दिन सुबह नाना नदी के तट पर पहुँचे। महावत हाथी को लेकर नदी के तट पर पहले ही पहुँच चुका था। नाना ने एक बहुत बड़ी नाव मँगवाई थी। अपने सेवकों से बहुत सारे बाट, तराजू व बड़े-बड़े पत्थर भी मँगवाए थे।

नाना ने हाथी के महावत से कहा – "हाथी को नाव पर चढ़ाओ।" महावत

5th Hindi Book.indb 65 18-03-2019 17:51:37

ने हाथी को नावपर चढ़ा दिया। नाव बहुत बड़ी थी । हाथी के चढ़ने से आधे से ज़्यादा नाव पानी के अंदर चली गई । नाव जहाँ तक पानी में डूबी, नाना ने वहाँ तक नाव पर निशान लगवा दिया । निशान लगवाने के बाद हाथी को नाव से उतरवा लिया।

नाना ने सेवकों से कहा – "नाव में पत्थर डालो।" सेवको ने नाव में पत्थर डाल दिया । नाना तब तक नाव में पत्थर डलवाते रहे, जब तक नाव पानी में उस निशान तक नहीं डूबी, जिस निशान तक हाथी के चढने से डूबी थी। जब नाव उस निशान तक डूब गई, तब नाना ने और पत्थर डालने से मना कर दिया और सब से कहा – "इन पत्थरों को बाहर निकालो और इनका वज़न करो।"

सेवकों ने नाव में भरे गए सभी पत्थरों का वज़न कर दिया । नाना ने पत्थरो के वजन को ज़ोड़कर हाथी का वज़न निकाल लिया और निज़ाम के पास हाथी का वज़न लिखकर भेज दिया । निज़ाम नाना फडणवीस की चतुराई से बहुत प्रसन्न हुए ।

नाना की चतुराई से संबंधित एक और घटना है। एक बार एक धनी व्यक्ति की मृत्यु हो गई । उसके पास सत्रह घोड़े थे । उसने अपने तीनो बेटों के लिए घोड़ों का बँटवारा इस प्रकार किया कि बड़े को आधे घोडे, मँझले बेटे को तीसरा भाग तथा छोटे बेटे को नौवाँ भाग मिले ।

तीनों लड़को में घोड़ो को लेकर लड़ाई होने लगी । उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि वे घोड़ों को कैसे बाँटे? वे तीनों नाना फडणवीस के पास गए और घोड़ों का बँटवारा करने के लिए प्रार्थना की।

नाना ने ध्यानपूर्वक उनकी बात सुनी और कहा – "सत्रह का आधा, तिहाई और नवाँ हिस्सा करना तो कठिन है। खैर, मैं कोशिश करता हूँ । तुम्हारे बँटवारे को आसानी से करने के लिए मैं अपना एक घोड़ा और दे देता हूँ ।" उसे सुनकर तीनों भाई प्रसन्न हो गए ।

5th Hindi Book.indb 66 18-03-2019 17:51:49

नाना ने एक मरियल –सा घोड़ा लाकर उन घोड़ों के बीच में खड़ा कर दिया। और घोड़े को देखते ही तीनों भाईयों ने उसे लेने से इनकार कर दिया।

नाना ने कहा – "ठीक है, नहीं चाहिए तो मत लो। मैं तुम्हारे सत्रह घोड़ों को ही बाँटने का प्रयास करता हूँ।"

नाना ने सबसे पहले छोटे लड़के को बुलाया और कहा- "सत्रह का नवाँ भाग, दो से कुछ कम होता है, परंतु तुम पूरे दो घोड़े ले लो।"

इसके बाद नाना ने मँझले से कहा – "सत्रह का तीसरा हिस्सा छह से कुछ कम होता है, परंतु तुम पूरे छह ले लो।"

अंत में बड़े लड़के से कहा – "सत्रह का आधा साढ़े आठ होता है, किंतु तुम पूरे नौ घोड़े ले लो।"

नाना के बँटवारे से तीनों भाई प्रसन्न हो गए। वे इस बात से खुश थे कि उन्हें उनके हिस्से से अधिक घोड़े मिले हैं। वे हैरान भी थे कि घोड़े अधिक मिले कैसे ?

शिक्षा – बुद्धिमान व्यक्ति अपनी चतुराई से बड़ी-से-बड़ी समस्या का समाधान आसानी से कर देते है।

अभ्यास



I. कठिन शब्दार्थ –

1. निपुणता – कुशलता, प्रवीणता
2. कहावत – कथन
3. खोखली – पोली, थोथी
4. फ़ुरसत – समय
5. निज़ाम – हैदराबाद के शासको की उपाधि
6. महावत – हाथीवान
7. चतुराई – चालाकी
8. मँझला – बीच का

5th Hindi Book.indb 67 18-03-2019 17:51:59

II. सही विकल्प पर चिह्न (✓) लगाइए –

1. पेशावा का राज्य किसके कारण कायम था?

    1. ☐ पेशावा की राजनीतिक समझ के कारण
    2. ☐ नाना फडणवीस के कारण
    3. ☐ अँग्रेज़ों की दोस्ती के कारण

2. निज़ाम ने नाना के पास हाथी को क्यों भेजा था?

    1.☐ नाप बताने के लिए
    2.☐ बज़न बताने के लिए
    3.☐ उपहार में दिया था

3. नाना ने नदी के तट पर क्या मँगवाया?

    1. ☐ बहुत बड़ी तराजू
    2. ☐ हाथी के लिए गन्ने
    3. ☐ बहुत बड़ी नाव

4. धनी व्यक्ति के पास कितने घोड़े थे ?

    1. ☐ पंद्रह 2.☐ सत्रह 3.☐ उन्नीस

5. घोड़ो का बँटवारा किसने किया?

    1.☐ लड़को के पिता ने
    2.☐ न्यायाधीश ने
    3.☐ नाना फडणवीस ने

6. मँझले बेटे को कितने घोड़े मिले?

    1.☐ दो 2.☐ छह 3.☐ नौ

5th Hindi Book.indb 68 18-03-2019 17:52:05

कहानी 19 ईमानदारी की विजय



छुट्टी का समय हो गया था। नवदीप अपनी बेंच से नहीं उठा । उसका मित्र संदीप उसके पास पहुँचा और पूछा – "क्या बात है ?" आज घर नहीं चलना है?

"अभी कुछ काम बाकी है। इसे निपटाना आवश्यक है। तुम चलो।" नवदीप ने कहा तो संदीप चला गया। नवदीप ने लंबी साँस ली। वास्तव में उसे कोई काम था ही नहीं । वह एकांत चाहता था। उसने शीघ्रता से फ़ाइलों में कागज़ लगाए । फिर उन्हें अलमारी में रखकर ताला लगा दिया ।

नवदीप ने कोट की जेब में हाथ डाला । उसके मन में भाँति –भाँति के विचार आने लगा । आज घटना ही ऐसी हो गई थी , जिसने उसे परेशान कर दिया था। उसने आज तक ईमानदारी से नौकरी की थी। लालच के कई अवसर आए, पर उसका मन डाँवाँडोल नहीं हुआ था। सब उसकी ईमानदारी का उदाहरण देते थे। उसने कोट की जेब में फिर हाथ डाला । एक सौ का नया नोट अंदर खड़खड़ा रहा था। उसने कृष्णगोपाल को बार-बार मना किया था, पर वह जबरदस्ती सौ का नोट उसकी जेब में डाल गया था । जाते-जाते कह गया था – 'नवदीप बाबू ! सूखी तनख्वाह से गुज़ारा नहीं चलता। हमारा आपसे वर्षों से काम पड़ता आया है। वक्त बदल गया है। आप हमारा ख्याल रखते हैं। हमारा फ़र्ज़ भी आपका ख्याल रखने का है या नहीं।'

नवदीप तब से परेशान था। वह दफ़्तर के कमरे से बाहर आकर खुली हवा में बैठ गया। उसे लगता कोई बार-बार उससे पूछ रहा था – 'क्या आज तक तुम्हार कोई काम रुका है? तुम घर-परिवार का गुज़ारा अच्छी तरह चला रहे हो। सब तुम्हारी ईमानदारी की प्रशंसा करते हैं।'

तभी उसके मन में दूसरा विचार आया – 'अधेड़ावस्था में पहुँच गए हो। अभी तक खाली गुज़र-बसर हो रही है। चार पैसे जमा नहीं कर सके हो। अभी

5th Hindi Book.indb 69 18-03-2019 17:52:18

एक लड़की का विवाह किया है। उसी का कर्ज़ नहीं उतार पाए । अभी एक लड़के और एक लड़की का विवाह और करना है। यदि इसी तरह प्रतिदिन सौ रुपए भी ले लोगे तो महीने में तीन हज़ार हो जाएँगे । साल का हिसाब लगाओ । सतीशराज और रामरतन को देखो। तुम्हारी तरह दफ़्तर में बाबू है। दो-दो मकान बना रखे हैं। बेटियों के विवाह धूमधाम से कर चुके हैं। दो-दो कारों के मालिक है । तुम्हारे पास क्या है, बस टूटा-फूटा एक स्कूटर!'

मन में हिसाब लगाने लगा। एक महीने में तीन हज़ार तो एक साल में छत्तीस हज़ार वाह! वह उठकर घर की ओर चल पड़ा। महीने की पच्चीस तारीख होने पर भी उसकी जेब में सौ का नोट था। हर महीने बीस तारीख तक ही सारी तनख्वाह खर्च हो जाती थी। वह रास्ते के बाग में जाकर बेंच पर बैठ गया। वह कागज़ पर हिसाब करने लगा। अभी नौकरी के दस साल पडे थे । दस साल में वह तीन लाख, साठ हज़ार कमा लेगा । फिर आवश्यक नहीं है कि वह प्रतिदिन रिश्वत में सौ रुपये ले । वह दो-तीन सौ भी लेने लगेगा। तब सब ठीक हो जाएगा। उसकी पत्नी और बच्चे भी उससे प्रसन्न रहने लगेंगे।

"अरे! नवदीप बाबू! यहाँ कैसे? लगता है दफ़्तर से थककर आराम कर रहे हैं । आपने सुना सतीशराज हृदय गति रुकने से मर गया। बहुत बेईमान था । बईमानी से कमाया सारा धन यहीं रह गया।" उसका मित्र आशोक उसे सतीशराज की मृत्यु का समाचार सुनाकर चला गया ।

नवदीप बड़बड़ाते हुए उठा- 'हे भगवान! तुमने मुझे बचा लिया।' इतना कहकर वह बगल वाले मंदिर की ओर चल पड़ा । उसने सौ रुपयों के पूरी-चने लिये। उन्हें मंदिर के बाहर बैठे भिखारियों में बाँट दिया । फिर उसने मंदिर में जाकर भगवान की मूर्ति के समक्ष सिर झुकाया और घर लौट आया ।

"आज इतनी देर कैसे कर दी?" उसकी पत्नी ने चिंता प्रकट करते हुए पूछा ।

"बस यूँ ही देर हो गई। मंदिर चला गया था।"

शिक्षा – सत्यमेव जयते । रिश्वत पाप की कमाई है।

5th Hindi Book.indb 70 18-03-2019 17:52:29

अभ्यास



I. कठिन शब्दार्थ –

1. निपटाना – कार्य पूरा करना
2. एकांत – अकेला, निर्जन स्थान
3. डाँवाँडोल – चंचल, अधीर
4. ख्याल – ध्यान, सोच – विचार
5. अधेडावस्था – ढलती उम्र
6. रिश्वत – घूस
7. समक्ष – सामने
8. बड़बड़ाना – अपने आप धीमी आवाज़ में बोलना

II. सही विकल्प पर चिह्न (✓) लगाइए –

1. नवदीप ने फ़ाइलों में कागज लगाकर उन्हें कहाँ रखा?

   1. ☐ टाँड पर 2. ☐ अलमारी में 3. ☐ मेज की दराज़ में

2. नवदीप के कोट की जेब में क्या था?

   1. ☐ मनी आँर्डर 2. ☐ वेतन 3. ☐ सौ रुपये

3. सतीशराज दफ़्तर में क्या थे?

   1. ☐ चपरासी 2. ☐ बाबू 3. ☐ सफ़ाई कर्मचारी

4. नवदीप बाग में जाकर कहाँ बैठ गया?

   1. ☐ बेंच पर 2. ☐ हरी घास पर 3. ☐ चबूतरे पर

5. नवदीप की नौकरी के कितने साल बाकी थे ?

   1. ☐ आठ साल 2. ☐ दस साल 3. ☐ बारह साल

5th Hindi Book.indb 71 18-03-2019 17:52:38

III. किसने, किससे कहा? सही विकल्प पर चिह्न (✓) लगाइए

1. अभी कुछ काम बाकी है। इसे निपटाना आवश्यक है।

   1.□ संदीप ने नवदीप से 2.□ नवदीप ने संदीप से

2. आपने सुना, सतीशराज हृदय गति रुकने से मर गया।

   1.□ रामरतन ने नवदीप से 2.□ अशोक ने नवदीप से

3. बस यूँ ही देर हो गई। मंदिर चला गया था।

   1. □नवदीप ने अपनी पत्नी में 2.□ नवदीपने संदीप से

IV. प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. नवदीप कैसा व्यक्ति था?

2, नवदीप क्यों परेशान था?

3. नवदीप के मन में लालच क्यों आया?

4. अंत में नवदीप ने कौन-सा मार्ग चुना?

5. कहानी की सीख क्या हैं ।

5th Hindi Book.indb 72 18-03-2019 17:52:47

Term I, II, III

व्याकरण, निबंध, पत्र



5th Hindi Book.indb 73 18-03-2019 17:53:01

निबंध 20 राष्ट्रीय पक्षी – मोर



पक्षियाँ कई तरह के होते हैं । मोर सबसे सुंदर पक्षी है। मोर काले बादलों को देखकर नाचता हैं।उस समय वह चारों और चक्कर लगाकर नाचता हैं।

चिड़िया, तोता, कोयल, कौआ, हंस मोर आदि हमारे प्यारे पक्षी हैं। हमारे देश का राष्ट्रीय पक्षी मोर है। मोर कार्तिक भगवान का वाहन है। मोर के पंख सुन्दर है। मोर का पंख घर की शोभा बढ़ाते है। मोर के पंख दोष दूर करते है। मोर का नाच मनोहर है। बादल का शोर मोर को पसंद है । मोर मिलनसार है। पेड़ो पर रहते हैं। महलों के उपवन की शोभा मोर है।

निबंध 21 डाक घर



डाकों का घर डाक घर है। हमारे देश के हरेक गाँव में डाक घर है। डाक-विभाग केन्द्र सरकार के अधीन हैं। डाक-घर में पोस्टल-आर्डर, डाक-डिकट, कार्ड, लिफाफे आदि मिलते है। डाक बाबू डाक घर का मुखिया है । डाकिया डाकों को घर-घर पहुँचाता है। डाक घर में लोगों की सुविधा के लिए डाक बैंक है। बचत-खाता खोलने की सुविधा है । स्पीड डाक, रेजिस्टर डाक, साधारण डाक आदि भेजने की सुविधा है। डाक-घर चौबीस घंटे 365 दिन काम करती है। डाक घर का काम महत्वपूर्ण है। आजकल डाक घर में महिलाएँ भी कार्यरत है।

5th Hindi Book.indb 74 18-03-2019 17:53:16

निबंध 22 मेरा नगर



मेरा नगर चेन्नई है। यह समुद्र के किनारे पर बसा है। चेन्नै का समुद्री किनारा दुनियामें प्रसिद्ध है। चेन्नै तमिलनाडु की राजधानी है। यह भारत के प्रमुख शहरों में एक है। चेन्नई में करीब आठ लाख लोग रहते हैं। यहाँ सभी धर्मों और जातियों के लोग रहते है। यहाँ कई भाषाएँ बोली जाती है। यहाँ स्कूल और कालेज है। प्रसिद्ध मंदिर है। चेन्नई का म्यूजियम देखने लायक स्थान है।

चेन्नई का बाज़ार प्रसिद्ध है। यहाँ सब तरह की चीज़े मिलती है। यात्रा-केन्द्र मेरा चेन्नै नगर है ।

निबंध 23 बाघ



बाघ, शेर, चीता, भेडिया आदि जंगली जानवर हैं। बाघ हमारा राष्ट्रीय जानवर है। बाघ जंगली जानवर है। वह बिल्ली की शकल जैसी है। बाघ के शरीर पर पीली और काली धारियाँ होती है। बाघ की आँखे चमकीली है।

बाघ का खाल चिकना होता है। ऋषि उस पर बैठकर ध्यान करते हैं । बाघ की दौड़ की तेजी अनुपम है। बाग के नाखून दोष को दूर करता है। लोग घरों को बाघ की खाल और नाखून से सजाते है।

5th Hindi Book.indb 75 18-03-2019 17:53:31

निबंध 24 पोंगल



पोंगल भारतीयों का त्योहार है। हर साल जनवरी में मनाते हैं। पोंगल को मकर संक्राति भी कहते है। किसान का त्योहार है। पोंगल तीन दिनों तक मनाते है। पहला दिन भोगी, दूसरा दिन पोंगल, तीसरा दिन कानुम पोगंल है। पोंगल के दिन घर की सफाई करते है। पुरानी वस्तुओं को जलाते है । पोंगल के दिन सूर्य की पूजा करते हैं। कट्टा-मीठा पोंगल बनाकर खाते हैं । गाय-बैलों को सजाते हैं। गाय-बैल को अलंकार कर पूजा करते है। सब नए कपडे पहनते है। एक दूसरे से मिल-झुलकर मेले में जाते है। पोंगल खुशियों का त्योहार है।

निबंध 25 गाय



गाय, बैल, मैंस कुत्ता, घोडा, हाथी, ऊँट आदि पालतु जानवर है। गाय गोमाता है। गाय शुभ लक्षण है। हम गाय की पूजा करते है। गाय कई रंगों के होते हैं। गाय पालनेवालों को गोपालक कहते है। गाय घास खाती है और हमें दूध देती है। गाय का दूध मीठा होता है। गाय का दूध पतला होता है। भैंस भी दूध देती हैं। भैस का दूध गाढा होता है। गाय का दूध वच्चों के लिए उपयोगी होते हैं। दूध से दही, मक्खन और घी बनाते है। घी से हम मिठाई बनाते हैं।

5th Hindi Book.indb 76 18-03-2019 17:53:47

26 व्याकरण



1. क्रिया – होना या करना क्रिया है। क्रिया दो प्रकार के है।

   1. सकर्मक 2. अकर्मक

2. वचन - वचन संख्या बोधक है। वचन दो प्रकार के है।

   1. एकवचन 2. बहुवचन जैसे लड़का-लड़के, भाई-भाई

3. लिंग - लिंग जाति का बोध कराता है। लिंग दो प्रकार के है।

   1. स्त्रिलिंग 2. पुल्लिंग, लड़की – लडका, भाई - बहन

4. कारक - संज्ञा या सर्वनाम के संबंध को जोड़नेवाला शब्द कारक है। कारक आठ प्रकार के है। कर्ता, कर्म, करण, संप्रदान, अपादान संबंध, अधिकरण, संबोधन

5. संधि - वर्णों के समूह को संधि कहते है। संधि तीन प्रकार के है। स्वर संधि, गुण संधि, दीर्घ संधी

6. समास - शब्द समूह को समास कहते है। समास चार प्रकार के है।

   1. अव्ययी भाव समास, तत्पुरुष समास, द्वंद समास, द्विगु समास

7. संज्ञा - संज्ञा नाम बतानेवाले शब्द को कहते है। संज्ञा पांच प्रकार के है। व्यक्ति वाचक संज्ञा, जातिवाचक संज्ञा, भाव वाचक संज्ञा, द्रव्य वाचक संज्ञा, समुह वाचक संज्ञा राम, गाय, तेल, भीड, कोमल

5th Hindi Book.indb 77 18-03-2019 17:53:59

8. सर्वनाम – संज्ञा के बदले में आनेवाला शब्द सर्वनाम है। मैं, हम, तुम, आप, यह, ये, वह, वे सर्वनाम छः प्रकार के है । पुरुषवाचक, निश्चयवाचक, अनिश्चयवाचक, संबंधवाचक, प्रश्नवाचक सर्वनाम, निजवाचक

9. विशेषण - संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बतानेवाला शब्द विशेषण है। अच्छा, बुरा! विशेषण चार प्रकार के हैं। गुणवाचक, संख्यावाचक, परिमाणवाचक, सार्वनामिक आदि

1. काल - काल समय सूचक है। काल वर्तमान, भूत, भविष्य आदि। जैसे – है, हुआ, होगा ।

2. वर्णमाला - वर्णो का समूह वर्णमाला है।

वर्णमाला, दो प्रकार के है। 1. स्वर 2. व्यंजन

3. मुहावरा - मुंह से निकला शब्द मुहावरा है।

4. लोकोक्ति - लोक में प्रचलित शब्द लोकोक्ति है।

5. वर्ण विच्छेद - वर्णो को अलग कर लिखना वर्णविच्छेद है।

6. संयुक्ताक्षर - अक्षरों को जोड़कर लिखना संयुक्ताक्षर है।

7. अनेकार्थक शब्द - एक ही शब्द का अनेक अर्थ है । उसे अनेकार्थक शब्द हैं।

जैसे सोना, धातु, नींद
जल – आग, नीर ।

5th Hindi Book.indb 78 18-03-2019 17:54:10

27 पत्र



छुट्टी के लिए प्रधानाध्यापक को प्रार्थना – पत्र

चेन्नै

दि.17.8.2019

प्रेषक

राजा
पांचवीं कक्षा
जवहर विद्यालय,
चेन्नई – 83

सेवा में

श्री प्रधानाध्यापक,
कक्षा अध्यापक
जवहर विद्यालय,
चेन्नै – 83

आदरनीय महोदय,

सादर प्रणाम । दि.20.8.2019 को मेरी बहन की शादी है । उसमें मुझे जाना है। अतः प्रार्थना है कि दि.(18.8.2019 से दि.22.08.2019) पाँच दिनों की छुट्टी देने की कृपा करें ।

धन्यवाद ।

आपका आज्ञाकारी छात्र,

राजन

5th Hindi Book.indb 79 18-03-2019 17:54:23

28 पर्यायवाची शब्द



पृथ्वी	-	भू, भूमि, धरती
सूर्य	-	रवि, भानु, दिनकर
जल	-	नीर, पानी, सलिल
पवन	-	हवा, वायु, अनिल
घर	-	आवास, भवन, आलय
कमल	-	जलज, सरोज, पंकज
चन्द्रमा	-	शशि, सोम, सुधाकर
शिव	-	महादेव, महेश, शंकर
गणेश	-	गणपति, गजानन, गजवदन
सरस्वती	-	शारदा, वाणी, भारती
आदमी	-	नर, पुरुष, मनुष्य

अनेकार्थी शब्द

अंक	-	गोद, नाटक के अंक
कर	-	हाथ, सूंड
पत्र	-	पत्ता, चिट्ठी
कल	-	यन्त्र, पिछला – अगला दिन
अन्त	-	मरण, सीमा

5th Hindi Book.indb 80 18-03-2019 17:54:36

29 लिंग बदलिए



1. लड़का	-	लड़की		13. अध्यापक	-	अध्यापिका
2. पुत्र	-	पुत्री		14. मोर	-	मोरनी
3. घोडा	-	घोडी		15. मालिक	-	मालिकिन
4. बाष	-	माँ		16. सास	-	ससुर
5. भाई	-	बहन		17. बैल	-	गाय
6. मुर्गा	-	मुर्गी		19. शेर	-	शेरनी
7. ऊँट	-	ऊँटनी		20. छात्र	-	छात्रा
8. बेटा	-	बेटी		21. ठाकुर	-	ठाकुराइन
9. बंदर	-	बंदरिया		22. सुनार	-	सुनारिन
10. बूढा	-	बूढी		23. माली	-	मालिन
11. राजा	-	रानी		24. छोबी	-	धोबिन
12. विद्वान	-	विदूषी		25. पति	-	पत्नी

5th Hindi Book.indb 81 18-03-2019 17:54:49

30 वचन बदलिए



1. कपडा	-	कपडे	14. महीना	-	महीने
2. रुपया	-	रुपये	15. घर	-	घर
3. लड़की	-	लड़कियाँ	16. विद्यार्थी	-	विद्यार्थीं
4. रात	-	रातें	17. अध्यापक	-	अध्यापक
5. लता	-	लताएँ	18. भाई	-	भाई
6. चिडिया	-	चिडियाँ	19. हाथी	-	हाथी
7. कमरा	-	कमरे	20. कला	-	कलाएँ
8. शेर	-	शेर	21. किताब	-	किताबें
9. नदी	-	नदियाँ	22. कलम	-	कलमें
10. वहन	-	बहनें	23. बुढ़िया	-	बुढ़ियाँ
11. तस्वीर	-	तस्वीरें	24. बाल	-	बालाएँ
12. दूकान -	-	दूकानें	25. माला	-	मालाएँ
13. पाठशाला		पाठशालाएँ			

5th Hindi Book.indb 82 18-03-2019 17:55:03

Hindi – Std V

List of Authors and Reviewers

Chairperson

Dr. M. Seshan,
Professor (Retd.,)
Head of the Department. (Hindi)
D.G. Vaishnav College, Arumbakkam, Chennai.

Reviewer

Dr. Kokila P.C.,
Associate Professor (Retd.),
Head of the Department. (Hindi)
Presidency College, Chennai.

Authors

S. Anandakrishnan, M.A., M.Ed.,
Headmaster (Retd.)
The Hindu Hr. Sec. School, Triplicane, Chennai.

S. Satyanarayanan, M.A., M.Ed.,
PG Asst. in Hindi (Retd.)
Kesari Hr. Sec. School, Mylapore, Chennai.

M. Gabriel Govindaraju, M.A., B.Sc., B.Ed.,
Lecturer in Hindi (Retd.)
Navalar Nedunchezhin GHSS, Lawspet, Puducherry.

S. Muralidharan, M.A., B.Ed.,
PG Asst.,
Jawahar Higher Secondary School, Ashok Nagar, Chennai.

O.V.S. Mallika, M.A., B.Ed., M.Phil.,
B.T. Asst.,
Kesari Hr. Sec. School, Mylapore, Chennai.

R. Radjamohane, M.A., B.Ed.,
Lecturer in Hindi
Jeevanandam GHSS, Karamanikuppam,
Directorate of School Education, Puducherry.

Coordinator

K. Chandrasekaran,
Lecturer, DIET, Chennai.

Art and Design Team

Layout
Thy Designers

QC
Asker Ali

Wrapper Design
Kathir Arumugam

Co-ordination
Ramesh Munisamy

Typist
Smt. V.V. Shanthi

This book has been printed on 80 GSM Elegant Maplitho paper.

Printed by offset at:

5th Hindi Book.indb 83 18-03-2019 17:55:03

NOTES

5th Hindi Book.indb 84 18-03-2019 17:55:03

NOTES

5th Hindi Book.indb 85 18-03-2019 17:55:03

NOTES

5th Hindi Book.indb 86 18-03-2019 17:55:03

NOTES

5th Hindi Book.indb 86 18-03-2019 17:55:03

NOTES

5th Hindi Book.indb 86 18-03-2019 17:55:03